अध्याय–3

-: श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी:-

बेचैन जी के साहित्य में नारी को खोजने से पूर्व हमें साहित्य के संदर्भ में जानना आवश्यक है क्योंकि साहित्य उनके इस अध्याय का मूल है जो कि अपने मूल के साथ इस अध्याय को संजोए हुए है जिसका मैंने इस रूप में वर्णन किया है।

-:साहित्य का स्वरूप एवं परिभाषा:-

साहित्य शब्द का विग्रह हम दो तरह से कर सकते है। सहित = स+हित = सहभाव, अर्थात् हित का साथ होना ही साहित्य कहलाता है। साहित्य शब्द अंग्रेजी के Literature का पर्यायी है। सर्व विदित है जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द Letter से मानी गई है।

साहित्य का स्वरूप

भाषा के माध्यम से अपने अंतरंग की अनुभूति, अभिव्यक्ति कराने वाली ललित कला 'काव्य' अथवा 'साहित्य' कहलाती है। ललित कला अथवा अँग्रेजी का Fine Art शब्द उस कला के लिए प्रयुक्त किया जाता है, जिसका आधार सौंदर्य या सुकुमारता है। जैसे- चित्रकला, नृत्य, शिल्पकला, वास्तुकला, संगीत आदि इसके उदाहरण हैं। किन्तु आधुनिक धारणाओं के साथ ललित कला में अपेक्षित सौन्दर्यभाव, रमणीयता का भाव धीरे-धीरे लुप्त होता चला जा रहा है। अत: हर ललित कला, सौंदर्य की निर्मिति करनेवाली ही हो, यह संभव नहीं। यथार्थ के अंकन के साथ 'सौंदर्य' इस शब्द का बदलता अर्थ हम देख ही रहे है। साहित्य की व्युत्पति को ध्यान में रखकर इस शब्द के कई अर्थ प्रस्तुत किए गए है। 'यत' प्रत्यय के योग से साहित्य शब्द की निर्मिति मानी गई है। शब्द और अर्थ का सहभाव ही साहित्य कहलाता है। कुछ विद्वानों के अनुसार हितकारक रचना का नाम ही साहित्य है।

साहित्य शब्द का प्रयोग 7वीं-8वीं शताब्दी से ही हमें मिलता है। इससे पूर्व साहित्य शब्द के लिए काव्य शब्द का प्रयोग अक्सर होता था। भाषाविज्ञान का यह नियम है, कि जब एक ही अर्थ में दो शब्दों का प्रयोग

होता है, तो उनमें से एक अर्थ संकुचित होता है। संस्कृत में जब एक ही अर्थ में साहित्य और काव्य शब्द का प्रयोग होने लगा, तब धीरे-धीरे काव्य शब्द का अर्थ भी संकुचित होने लगा। आज काव्य का अर्थ केवल कविता है और साहित्य शब्द को व्यापक अर्थ में प्रत्येक स्थान पर लिया जाता है। साहित्य का तात्पर्य अब कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा अर्थात् गद्य और पद्य की सभी विधाओं से है।

काव्य के स्वरूप को लेकर उसे परिभाषित करने का प्रयास २०० इ.स.पूर्व से अब तक हो रहा है। विविध विद्वानों ने साहित्य के लक्षण प्रस्तुत करते हुए उसे परिभाषित करने का अपने स्तर पर प्रयास किया है। किंतु उन प्रयासों में कहीं अतिव्याप्ति, तो कहीं अव्याप्ति का दोष मिल जाता है। काव्य को परिभाषित करते समय वे विद्वान अपने समकालीन साहित्य तथा साहित्य विषयक धारणाओं से अक्सर प्रभावित रहे हैं।

संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी के विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं का विवेचन निम्नानुसार हम प्रस्तुत कर रहे हैं -

[अ.]संस्कृत विद्वानों द्वारा प्रस्तुत साहित्य की परिभाषाएं -

संस्कृत साहित्य में साहित्य स्वरूप विश्लेषण का प्रारंभ आचार्य भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' से ही माना जाता रहा है। यद्यपि नाट्यशास्त्र का प्रमुख्य विवेच्य विषय नाट्य है, लेकिन प्रसंगवश साहित्य स्वरूप का विश्लेषण भी इसमें भरपूर हुआ है।

साहित्य स्वरूप को स्वतंत्र रूप से विश्लेषित करने का प्रथम प्रयास 'अग्निपुरान' में हम देख सकते हैं। जिसके रचयिता वेदव्यास जी है।

1. आचार्य भामह अपने ग्रंथ '***काव्यालंकार***' में साहित्य की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि -

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"[1]

भामह प्रथम आचार्य हैं, जिन्होंने काव्य लक्षण देते हुए कहा है कि शब्द और अर्थ का सहभाव ही काव्य है। काव्य के लिए शब्द और अर्थ की संगति बहुत ही आवश्यक है। शब्द दो प्रकार के होते हैं - पहला सार्थक और

दूसरा निरर्थक। काव्य में अक्सर सार्थक शब्दों का ही महत्व होता है। क्योंकि सार्थक शब्दों में ही अर्थ प्रतिति कराने की क्षमता विद्यमान होती है।

किंतु भामह के इस मत पर आक्षेप करते हुए कहा जाता है कि शब्द और अर्थ का सहभाव तो शास्त्रों की पुस्तकों में भी होता है। मात्र उसे हम साहित्य की श्रेणी में नहीं रख सकते।

2. आचार्य दंडी के मतानुसार–

"शरीर तावद् इष्टार्थ व्यावच्छिन पदावली।"[2]

अपने ग्रंथ '***काव्यादर्श*** में काव्य को परिभाषित करते हुए दंडी ने कहा है कि काव्य का शरीर तो इष्ट अर्थ से युक्त पदावली होता है। यहां इष्टार्थ का अर्थ हैं - अभिप्रेत अर्थ, अपेक्षित अर्थ। इस अर्थ को दंडी ने काव्य न मानकर काव्य का महज़ शरीर माना है। दंडी के इस मत पर भी आक्षेप करते हुए कहा गया है कि दंडी ने यहां केवल काव्य के शरीर के बारे में बताया गया है। आत्मा के संबंध में नहीं।

3. आचार्य वामन के मतानुसार--

"'रीतिरात्मा काव्यस्य् विशिष्ट पदावलिः रीति।"[3]

आचार्य वामन के ग्रंथ '***काव्यालंकार सूत्र***' के अनुसार काव्य की आत्मा केवल रीति होती है और विशिष्ट पदावलि ही रीति है। वामन ने इस परिभाषा में विशिष्ट पदरचना को काव्य का शरीर माना है एवं रीति को काव्य की आत्मा माना है।

वामन के इस मत पर आक्षेप लेते हुए कहा गया है कि उन्होंने रीति को काव्य की आत्मा माना है और पदरचना भी। जबकि पदरचना काव्य का बाह्य पक्ष मात्र है,अर्थात् केवल शरीर है। तो वह आत्मा कैसे हो सकती है?

4. आचार्य विश्वनाथ जी के अनुसार–

"वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम्"[4]

अथवा

'वाक्यं रसात्मकें काव्यं'

आचार्य विश्वनाथ अपने ग्रंथ ***'साहित्यदर्पन'*** में कहते है - रसयुक्त वाक्य ही काव्य है। यहां वाक्य का तात्पर्य उन शब्दों से है, जो अर्थयुक्त हो। अर्थात् सार्थक शब्द ही से वाक्यों का निर्माण होता है। उनके 'रसात्मक' शब्द में काव्य की अनुभूति है।

इस प्रकार संस्कृत के विद्वानों द्वारा प्रस्तुत काव्य की कुछ परिभाषाओं को देखा जा सकता है।

[आ]. <u>हिंदी के विद्वानों द्वारा प्रस्तुत साहित्य की परिभाषा:-</u>

हिंदी के विद्वानों के अनुसार लक्षण ग्रंथों के निर्माण की परंपरा आचार्य केशवदास से मानी जाती है। अतः इस आधार पर हिंदी साहित्य शास्त्र का प्रारंभ उन्हीं से माना जायेगा । आदिकाल में काव्य अंगों का भले ही गंभीर अध्ययन ना किया गया हो, परंतु कवियों ने काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, भाषा प्रयोग आदि के लक्षण प्रस्तुत किए हैं।

भक्तिकाल के कवियों की उक्तियों में भी साहित्य के लक्षण प्राप्त होते है। जैसे की कबीरदास कहते हैं -

"तुम जीन जानो गीत है, यह नीज ब्रह्म विचार।"[5]

वैसे साहित्य को परिभाषित करने का विचार रीतिकाल के कवियों में प्रखरता से होने लगा था। किन्तु मध्यकालीन आचार्यों द्वारा प्रस्तुत परिभाषाओं में मौलिक चिंतन का अक्सर अभाव रहा। वैसे वे संस्कृत के किसी-न-किसी आचार्य का वह अनुवाद करते रहे। उनमें केशवदास, चिंतामणि त्रिपाठी, कुलपति मिश्र, कवि ठाकुर आदि प्रचलित हैं।

संस्कृत तथा पाश्चात्य साहित्य शास्त्र में प्राप्त साहित्य की परिभाषाओं के समान हिंदी विद्वानों ने भी विशिष्ट मत या विचार को सामने रख कर साहित्य की परिभाषा प्रस्तुत की है जिन्हें निम्नानुसार देखा भी जा सकता है।

१. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के मतानुसार–

"जो प्रभावशाली रचना पाठक और श्रोता के मन पर आनंददाई प्रभाव डालती है, वह कविता कहलाती है।"[6] उनके अनुसार काव्य में विलक्षणता होती है, जिसमें आनंद निर्माण करने की क्षमता होती है।

२. आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के अनुसार–

साहित्य की परिभाषा के संदर्भ में इनके दो मत देखें जा सकते है।

i. "जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। ह्रदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते है।"[7]

ii. "कविता जीवन और जगत की अभिव्यक्ति है।"[8]

[इ.] <u>पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी प्रस्तुत साहित्य की परिभाषा:-</u>

पाश्चात्य साहित्य शास्त्र का प्रारंभ प्लेटो से माना गया है। तत्कालीन साहित्य और साहित्य विषयक धारणाओं के परिप्रेक्ष्य में इन परिभाषाओं को लिया जा सकता है।

१. प्लेटो के अनुसार--

"**साहित्य अज्ञान जन्य होता है।** साहित्य जीवन से दूर होता है, क्योंकि भौतिक पदार्थ स्वयं ही सत्य की अनुकृति है। फिर साहित्य तो भौतिक पदार्थों की अनुकृति होता है। अतः वह अनुकरण का अनुकरण होता है। साहित्य क्षुद्र मानवीय वासनाओं से उत्पन्न होता है और क्षुद्र वासनाओं को उभारता है। अतः वह हानिकारक होता है।"[9]

प्लेटो की साहित्य के स्वरूप के संबंध में यह धारणा अपने युगीन परिस्थिति और साहित्य को सामने रखकर तैयार हुई थी।

२. सैम्युअल टेलर कॉलरिज के अनुसार–

"Poetry is the best word in best order."[10]

अर्थात् सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम विधान ही कविता है।

३. पी.वी शैली के मतानुसार–

"Poetry is the record of the best and happiest movement of the happiest and best minds."[11]

सुखी और मन को आनंद देने वाले क्षणों में सुखद मन के आधार पर प्रकट हुई रचना कविता है।

४. मैथ्यू अर्नाल्ड के अनुसार--

"Poetry is a criticism of life."[12]

अर्थात् कविता अपने मूल रूप में जीवन की आलोचना है।

उपर्युक्त परिभाषाओं को देखकर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है, कि यह सभी परिभाषाएं विशिष्ट साहित्य, विशिष्ट मत तथा मतवाद से प्रेरित हुई है।

-:कविता का स्वरूप:-

कविता के स्वरूप पर हम इस प्रकार दृष्टि केंद्रित कर रहे हैं। कविता साहित्य की सबसे प्राचीन विधा मानी जाती है। तथा अधिकांश प्राचीन भारतीय ग्रंथों की रचना कविता में ही हुई है। कविता को पारिभाषित करने तथा उसके स्वरूप को पहचानने का प्रयास प्राचीन काल से ही होता चला आ रहा है। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में कहा गया है कि--

“शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्”[13]

अर्थात् शब्द और अर्थ के सुंदर सामंजस्य को ही काव्य कहते हैं। इसी परिभाषा को आधार मानकर प्राचीन काव्य शास्त्रीयों ने काव्य की आत्मा को ढूँढ़ने का निरंतर प्रयास किया था। किसी ने रस को कविता की आत्मा माना तो किसी ने ध्वनि को, किसी ने रीति को, किसी ने वक्रोक्ति को और किसी ने अलंकार को। काव्य स्वरूप को व्यक्त करने का यह प्रयास अब तक अनवरत जारी है। जो समय के अनुसार अव्यवी तत्वों की प्रधानता में परिवर्तन के आधार आंशिक परिवर्तित अक्सर होते रहे हैं किन्तु मूलभूत तत्व आज भी वही के वही हैं।

कविता क्या है ? इस संदर्भ हमारे भारतीय मनीषियों और साहित्यकारों ने अनेक परिभाषाएं दी है जिनमें से कुछ प्रमुख हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं –

-आचार्य विश्वनाथ के अनुसार:-

“वाक्यम् रसात्मकं काव्यम्’ अर्थात् रस की अनुभूति करा देने वाली वाणी काव्य है।”[14]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कविता की परिभषा तथा स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहते है:- ”हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शाब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। कविता से मानव भाव की रक्षा होती है। मानो वे पदार्थ व्यपार विशेष नेत्रों के सामने नाचने लगते हैं। वे मूर्तिमान होते दिखाई देने लगते हैं। उसकी उत्तमता या अनुत्तमता का विवेचन करने में बुद्धि से काम लेने की जरूरत नहीं पड़ती। कविता की प्रेरणा से मनोवेगों का प्रवाह फूट पड़ता है। तात्पर्य यह है कि कविता मनोवेगों को जागृत करने का उत्तम साधन है।”[15]

आचार्य हजारीप्रसाद द्धिवेदी के अनुसार., ”कविता का लोक प्रचलित अर्थ वह वाक्य है, जिसमें भावावेश हो, कल्पना हो, पद्लालित्य हो तथा प्रयोजन की सीमा समाप्त हो चुकी हो।-महादेवी वर्मा का कहना है कि:-

“कविता कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है।"[16]

कविता की इन परिभाषाओं के आधार पर कविता का स्वरूप कैसा हो यह निर्धारित कर सकते हैं।

कविता (काव्य) एक भावनात्मक प्रतिक्रिया पैदा करने के लिए अर्थ, ध्वनि, और तालबद्ध भाषा विकल्पों के माध्यम से व्यक्त अनुभव के बारे में एक कल्पनाशील जागरूकता है। कविता भाषा का गढ़ा हुआ एक संगमरमर जैसा स्वरूप है। यह एक रंग-बिरंगा कैनवास है - लेकिन यहाँ कवि पेंट के बजाय शब्दों का बहुत ही सुंदर उपयोग करता है। साहित्य एक सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। ये कवि के भाव एवं उसकी कल्पना पर आधारित होती है। मन के कुछ कथ्य और विचार जब भाव और कल्पना के सूक्ष्म एवं तरल धरातल पर उगते है तो उसमे से काव्य सृजन होता है।

ऐसा हमारा मानना है काव्य में लक्षणा और व्यंजना शक्ति बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसी के माध्यम से कवि की अनुभूतियाँ पाठक के मन, ह्रदय और मस्तिष्क पर अपने भाव पूर्ण चित्रण जागृत करने में सफल होती है। कविता बाह्य प्रकृति के साथ मनुष्य की अंतःप्रकृति का सामंजस्य घटित करती हुई भावात्मक सत्ता के प्रकार का प्रचार एवं प्रसार करती है।

कविता का बाह्य स्वरूप

कविता के बाह्य आकार को अगर कोई सुन्दर बनाता है तो वह छन्द है। छंद – “अक्षरों की संख्या एवं क्रम, मात्रा गणना तथा यति-गति के सम्बद्ध विशिष्ट नियमों से नियोजित पद्य रचना को ‘छंद’ कहा जाता है।

छन्द कविता के पदों में सक्रियता और प्रभावशीलता लाने का कार्य करता है। वह हमारी अनुभूतियों को लय, ताल और राग से स्पंदित भी करता है। छन्द के प्रमुख तीन तत्त्व होते हैं। प्रथम - मात्राओं और वर्णों की किसी विशेषक्रम से सजाना। दूसरा गति और यति के विशेष नियमों का पालन एवं तीसरा चरणान्त की समता। कवि की आत्मा का नाद ही लय रूप में छन्दों में प्रतिष्ठित होता है। छन्द भावों को तीव्रता प्रदान करता है। कविता को रमणीय और सजीव बना कर रस निष्पत्ति में भी सहायक होता हैं।

कविता में मापनी (Meter) का अपना अलग आधार होता है। हिंदी में अक्षरों की संख्या एवं उनकी मात्रा गणना और यति-गति के आधार पर छंदों का विन्यास होता है। किन्तु अंग्रेजी कविता में लघु गुरू या प्रबल बलाघात के आधार पर ही छन्द का निर्धारण होता है। कविताओं के तत्वों को एक कविता बनाने के लिए इस्तेमाल किए गए उपकरणों के एक सेट के रूप में हम उसको परिभाषित कर सकते हैं।

एक कविता दो या दो से अधिक पंक्तियां कविता की होती हैं। एक कविता आमतौर पर एक विन्यास में बंधी हुई होती है। पैराग्राफ एक साथ वर्गीकृत पंक्तियों की एक श्रृंखला है। वे एक निबंध में पैराग्राफ के बराबर हैं। कविता में पंक्ति समूहों का निम्न विन्यास होता है।

कविता योजना के अनुसार मुक्त और छंदबद्ध हो सकती है या नहीं, लेकिन इसे अपने आकार या शैली के अनुसार हम वर्गीकृत कर सकते हैं। काव्य शास्त्रों के अनुसार यहां तीन सबसे आम प्रकार की कविताएं हैं:

1. गीत कविता: यह कविता छंद मुक्त होने के साथ-साथ मजबूत विचारों और भावनाओं को व्यक्त करती है। ज्यादातर कविता, खासकर आधुनिक कविताएं और गीत कविताएं हैं।

2. कथा कविता: यह कविता एक कहानी कहती हुई प्रतीत होती है। इसकी संरचना एक कहानी की तरह दिखती है यानी, संघर्ष और पात्रों का सम्भाषण, कथनात्मकता चरमोत्कर्ष।

3. वर्णनात्मक कविता: यह कविता पूरी दुनिया का वर्णन करती है जो कवि के चारों ओर है। इसमें कवि विस्तृत कल्पना और विशेषणों का उपयोग करता है। यह कविता की अन्य की तुलना में 'बाह्य-केंद्रित' होती है जो कि अधिक व्यक्तिगत अभिव्यक्ति पर जोर देती है।

कविता का विश्लेषण करने का एक महत्वपूर्ण तरीका उसकी स्वयं की संरचना है। किसी कविता की शैली को देखने के बाद उसके समग्र संगठन या ध्वनि के पारंपरिक विन्यास से ही उसकी श्रेष्ठता समझ में आती है किन्तु आधुनिक कविताओं में अक्सर कोई भी पहचान योग्य संरचना नहीं होती है यानी वे छन्द मुक्त पद्य हैं। जैसे हाइकू कविताएं, मुक्तक नवगीत इत्यादि। छंद के बंधनों से मुक्त होने के बाद से कविता गद्य के एकदम नजदीक चली गई है। कभी-कभी कविता के बाह्य स्वरूप को देखकर कहना कठिन हो जाता है कि यह कविता है या फिर कोई गद्यांश है। अर्थात् यह समझ में नहीं आता है कि यह कविता है या कहानी।

<u>कविता का आंतरिक स्वरूप</u>

कविता के आंतरिक रूप को अगर विश्लेषित किया जाए तो उस कविता के भाव,प्रयोजन,कल्पनाशक्ति और उद्देश्य पर हम विचार कर सकते हैं।

कविता के पाठक अक्सर उनके साथ कई संबंधित धारणा रखते हैं: काव्य, मनुष्य-चेतना की सबसे महत्वपूर्ण सृजन है। काव्यशास्त्र में इसी का विश्लेषण किया जाता है। काव्य का लक्षण निर्धारित करना ही काव्यशास्त्र का प्रयोजन है। लक्षण का अर्थ है, असाधारण अर्थ। काव्य लक्षण का अर्थ है काव्य का विशेष धर्म है जो अन्य प्रकारों से काव्य का भेद दर्शाता है। कविता में मुख्य होती है अंतर्वस्तु । यह अंतर्वस्तु ही है ,जो अपना रूप निश्चित करती है लेकिन रूप सर्जना में कवि की प्रतिभा ,अध्ययन ,अभ्यास आदि काम में आते हैं। अंतर्वस्तु का निर्धारण भी प्रतिभा , अध्ययन और अभ्यास के बिना संभव नहीं होता । बिंब ,प्रतीक , रूपक आदि क्या करते हैं -यह जानने की बात है । अपने आप में बिंब ,प्रतीक , रूपकों का कोई मतलब नहीं। बिंब ,प्रतीक , व्यंजना तो हमारी रीतिकालीन कविता में भी मौजूद हैं लेकिन जिंदगी की गहराई और व्यापकता के अभाव में केवल मनोरंजन तक सीमित होकर रह जाते हैं।

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि कस्य काव्यपरिभाषा वर्तते?-- अर्थात् दोष-रहित और गुणालंकार सहित शब्दार्थ का नाम काव्य है- कहीं-कहीं अलंकार के स्फुट न होने पर भी दोष रहित और गुण-सहित शब्दार्थ काव्य कहे जाते हैं। आचार्य विश्वनाथ ने इस परिभाषा की आलोचना करते हुए कहा है कि गुणाभिव्यंजक शब्दार्थ तो उत्पन्न स्वरूप के उत्कर्षमात्रा हें, उसके स्वरूप व्यापक नहीं हैं। तथा काव्य तीन प्रकार के कहे गए हैं, ध्वनि,

गुणीभूत व्यंग्य और चित्र। ध्वनि वह है जिस, में शब्दों से निकले हुए अर्थ (वाच्य) की अपेक्षा छिपा हुआ अभिप्राय (व्यंग्य) प्रधान हो। गुणीभूत ब्यंग्य वह है जिसमें गौण हो। चित्र या अलंकार वह है जिसमें बिना ब्यंग्य के चमत्कार हो।मम्मट स्वयं गुणों को रस का धर्म मानते हैं- जहां रस नहीं है, वहां अलंकारों का प्रयोग हो सकता है।कोई सौंदर्यवती यदि आभूषण धारण करें, तो उसका प्राकृतिक सौंदर्य ओर अधिक निखर उठता है। ठीक वैसे ही कविता कामिनी अलंकार रूपी आभूषणों से अपने सौंदर्य को बढाती है। अलंकार मात्र सौंदर्य वृद्धि के साधन है, साध्य नहीं। काव्य के भाव पक्ष और शैली पक्ष दोनों के लिए ही अलंकार उपकारक है। अलंकार बाह्याभ्यन्तर दोनों में स्थित होते हुए भी काव्य में उसकी मुख्य स्थिति बाह्य ही होते है। अतः इसे सर्वोपरि स्थान नहीं मिला। अलंकारों से काव्य में रमणीयता आती है, भावोत्कर्ष में सहायता मिलती है।

"रसात्मकम् वाक्यम् काव्यम्"[17]

अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।

रस अन्तःकरण की वह शक्ति है, जिसके कारण इन्द्रियाँ अपना कार्य करती हैं, मन कल्पना करता है, स्वप्न की स्मृति रहती है इस तरह संस्कृत काव्यशास्त्र में जहाँ शब्द (अभिव्यंजना) को महत्वपूर्ण मानते हुए चमत्कार को उसका असाधारण धर्म स्वीकार किया वहां शब्दार्थसाहित्यवादियों- ने शब्दार्थ के महत्व को स्वीकार करते हुए रस या रस ध्वनि को काव्य के विशेष रूप में ग्रहण किया जिससे काव्य की काव्यात्मकता खुद ही सिद्ध होती हो। कविता को मर्मस्पर्शी बनाने में सार्थक ध्वनि - समूह का बड़ा महत्व है। विषय को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाने में शब्दार्थ योजना का बड़ा महत्व है। शब्दों का चयन कविता के बाहरी रूप को पूर्ण और आकर्षक बनाता है। कविता कवि की कल्पना शब्दों के सार्थक और उचित प्रयोग द्वारा ही साकार होती है। अपनी हृदयगत भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए कवि भाषा की अनेक प्रकार से योजना बनाता है और इस प्रकार प्रभावशाली कविता रचता है कि शब्द शक्ति, शब्द गुण, अलंकार लय तुक छंद, रस, चित्रात्मक भाषा इन सबके सहारे कविता का सौंदर्य संसार आकार ग्रहण करता है। लय और तुक कविता को सहज गति और प्रवाह प्रदान करते हैं। काव्य को केवल शब्द नहीं कहा जा सकता, वह निश्चित रूप से शब्दार्थ है, किंतु शब्दार्थ के सभी रूप काव्य नहीं हैकाव्य- यह है जहाँ शब्दार्थ का 'सहित अर्थात् कलात्मक प्रयोग है अर्थात् कवि कुशलता की सहायता से जहाँ शब्दार्थ का निर्माण हुआ हो।

इस तरह शब्द अर्थ के सहभाव काव्य सृजन की पहली शर्त है।

कविता में प्रत्यक्ष-परोक्ष सारे उपादान बिम्ब , प्रतीक, मिथक, अलंकार , छंद इत्यादि सभी भाषा की शक्ति है जो भाव और चरित्रों को आधार प्रदान करने वाली होती है । काव्य में बिम्ब , प्रतीक अथवा मिथक सजावट का कार्य तो करते ही हैं अपितु काव्य भाषा को विशिष्ट अर्थ प्रदान करते हैं । प्रतीक एवं शब्द चित्र की सार्थकता रचना में जब परिणित होती है , जब वे भाव, चरित्रों अथवा बिम्बों को उकेर कर काव्य पंक्तियों में परिलक्षित करने लगते हैं। ये भाव अथवा चरित्रों की उपादेयता में काव्यात्मक अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण अंग है। आज की कविता में जितनी कवायद अर्थग्रहण की हो रही है उतनी बिंब ग्रहण की नहीं हो रही।

दण्डी ने कहा कि जब कविता समझने की बात उठती है, तब शब्द ही पहले आते हैं न कि अर्थ पहले आता है। अग्निपुराणकार ने कहा कि शब्दों की ध्वन्यात्मकता का भी अपना एक महत्व है, भले ही अर्थ का अनुमापन न हुआ हो। जगन्नाथ भी शब्द की रमणीयता में काव्य के असाधारण धर्म को ही ढूंढते हैं। तथा जयदेव ने वाक एवं विश्वनाथ ने वाक्य को प्रधानता दी है। वस्तुत: इस वर्ग के विद्वान भृतहरि के शब्द ब्रह्म की अवधारणा से प्रभावित रहे हैं जिसके अनुसार शब्द से ही वस्तु का ज्ञान होता है।

यही कारण है कि कवि निर्जीव वस्तुओं में भी जीवन ढूंढकर अपनी भावनाओं में एक प्रभाव उत्पन्न करके जनसाधारण को एक नया सन्देश दे जाता है जो लोगों की नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर एक नए उत्साह का प्रादुर्भाव करता है।

3.1.-: श्यौराज सिंह बेचैन की कविता में नारी:-

'लड़की ने डरना छोड़ दिया' उनकी एक सुंदर कविता है। इस कविता में कवि ने बताया है कि लड़की पढ़-लिखकर ही तमाम झंझाओं से बाहर निकल सकती है। यहाँ नारी के निरक्षर होने की दशा को प्रतुत किया गया है। उसका तमाम डर शिक्षा से ही दूर हो सकता है --

“अक्षर के जादू ने

उस पर असर बड़ा बेजोड़ किया,

चुप्पा रहना छोड़

दिया, लड़की ने डरना छोड़ दिया।

हंसकर पाना सीख

लिया, रोना- पछताना छोड़ दिया ।।"[18]

वास्तव में अक्षर जादुई कैसा असर करता है। दलित और स्त्री के लिए अक्षर ही एकमात्र उपाय है। तथाकथित धर्मग्रन्थों में स्त्री को पराधीन/दासी बनाकर रखा गया। सीता, द्रोपदी, अहिल्या उसके आदर्श बना दिये गये, परन्तु आधुनिक समता आंदोलन में ये पात्र किसी भी प्रकार से आदर्श नहीं हो सकते। ये पात्र पुरुषवादी मानसिकता में रचे गए हैं और पुरुषों के आगे हार मानते हुए पात्र हैं। कवि बेचैन संघर्षरत और बराबरी की चाह ना रखने वाली स्त्रियों को भी एक संघर्ष वाणी देते हैं। 'वह उठी' उनकी एक सुन्दर कविता है। कविता का प्रारम्भ स्त्रियों की बेचैनी दर्शाता है--

"नारी विरोध में

रचे गए उन ग्रंथों में

लूका देती,

वह निकल पड़ी बेचैन नारि।

पुरुषीय प्रभुत्व

प्रदत्त प्यार का यह प्रदण्ड।

कैसे रख पाये

स्पंदित उर को अखंड ।"[19]

कवि स्त्री अधिकारों के लिए बेहद सचेत है। विवाह में मिलने वाले दहेज को कवि पुरुष बराबरी में -'भीख' स्वीकार करता है। 'दहेज' स्त्री साथ अधुनातन -सबसे बड़ी रुकावट है। यह लड़की के अपमान के साथ सभ्यता का अपमान है। कवि की कविता "भीख मांगने के लिए" [20]इसी तथ्य को सामने रखती है।

कवि भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचारी आचरण पर भी व्यंग्य करता है। असल में हमारी तमाम प्रकार की जड़ताओं की जड़ पुरातनपंथी है। पुरातनपंथी ही हमारे आचरण में भ्रष्टाचार पैदा करती है। कवि की 'साली' कविता इसी भ्रष्ट आचरण की सहज व्यंग्य रचना है। 'गांव का ख़त' कविता में भी उन्होंने भ्रष्टाचार को ही विषय बनाया है। इसी भ्रष्टाचार के कारण सही पात्र को देश की आजादी की हवा का चैन नहीं मिल रहा। गरीब तो गरीब ही रह गया। अमीरों ने इस देश की दुर्दशास कर दी। यहाँ कवि ने नारी की बंधुआ मजदूर जैसी स्थिति को दर्शाया है--

"हो गया आजाद –

'होरी'

पर जुल्म ज़ारी भी है।

दुधमुँहे बच्चे-

को 'धनिया' पीठ में बांधे हुए

काम पर पहुँची

मगर सिर दर्द से भारी भी है।"[21]

कवि 'बंधुआ मजदूरिन' कविता में निजी विद्यालयों में शिक्षिकाओं के आर्थिक शोषण की पोल खोलते हैं। ये स्कूल शिक्षा का सौदा करते हैं और बहुत कम वेतन पर महिलाओं को नौकरी पर रखकर उनका दोहन करते हैं।

'फरेब नहीं' कविता में दलितों, नारी व दलित कवि के उत्पीड़न को बखूबी तरह उकेरा गया है-

"श्रमिकों का-

शोषण, स्त्रियों का-

वस्तुकरण

दलितों और अवामी-

कवियों की-

गर्दनों पर वैसे ही है

जैसे-

वधस्थल में-

पशुओं की गर्दन पर आरा है।"[22]

'नई फसल' में स्त्री विषयक रचनाएँ उनकी भौतिक और हृदयगत समस्याओं पर आधारित हैं। स्त्रियों की जीविका से जुड़े मुद्दे कविता में लाना कवि की कुशलता है -

"उसे सौ रूपल्ली पकड़ाए

छ: सौ पर दस्तख़त करावाए

कहने को मैडम टीचर हैं

असल में बंधुआ मजदूरिन हैं।"[23]

'अंधेरा समाज का' में अंधी लड़की की वेदना व्यक्त हुई है। उसी तरह गरीबी और दहेज के कारण बिटिया की शादी न हो पाने के कारण दु:खी है।

"अंधी लड़की

चाहती है कोई काम।

अंधी लड़की

देख नहीं पाती

जीवनसाथी की सूरत।"[24]

'भीख मांगने के लिए' शीर्षक कविता में मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त दहेज की समस्या का प्रकटीकरण किया गया है।

"पैदा हुई थी जिस दिन-

घर शोक में डूबा था।

बेटे की तरह उसका-

उत्सव नहीं मना था।

बंदिश भरा है बचपन-

बोझिल-सी जवानी है।

औरत की गुलामी भी-

एक लम्बी कहानी है।"[25]

आगे कवि श्यौराज सिंह 'बेचैन' लिखते हैं कि सारी अग्नि परीक्षाएं स्त्रियों के लिए ही हैं पुरुष तो ईश्वर का अवतार है-

"कभी अग्नि परीक्षा में –

औरत ही तो वैठी थी।

होती थी जब सती तो-

औरत ही तो होती थी।

उसी जुल्म की बकाया-

पर्दा भी निशानी है।

औरत की गुलामी भी-

एक लम्बी कहानी है।"[26]

डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने अपनी कविताओं में स्त्रियों की समस्याओं व उत्पीड़न को बड़ी मार्मिक ढंग से उकेरा है। चूँकि वे स्त्रियों के अधिकारों से भलीभांति परिचित थे, इसलिए उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से स्त्रियों को जागरूक व प्रेरित करने का प्रयास किया है--

“अब वक्त है वो अपने-

आयाम खुद बनाये।

तालीम हो या सर्विस-

अपने हकूक पाये।

मिलजुल के विषमता-

की दीवार गिरानी है।

औरत की गुलामी भी-

एक लम्बी कहानी है।"[27]

अर्थात् यहाँ कवि स्त्रियों को अपनी दासता की बेड़ियों को स्वयं काटने के लिए प्रेरित करता है। चूँकि कवि के भीतर आजादी की ललक आशा का संचार करती है। कवि उसके लिए हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा है। वह चुप भी नहीं है-दलित स्त्रियों व लोगों को आजादी दिलाने-, बल्कि व्यापक वंचित पाने का हर संभव उपक्रम करता रहता है।

कवि श्यौराज सिंह 'बेचैन' मानवतावाद पर बल देते हुए स्त्रीपुरुष - की समानता का भी सपना संजोते हैं। इस समानता के लिए वे स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए जोर देते हैं कि वह पढ़ लिख गई तो जीवन का सरा अंधेरा समाप्त हो जाएगा।

'लड़की ने डरना छोड़ दिया' नामक उनकी कविता इस दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इस कविता में कवि ने बताया है कि लड़की पढ़लिखकर ही - तमाम षड्यंत्रों से मुक्त हो सकती है। उसका तमाम भय व डर शिक्षा से ही दूर हो सकता है और शिक्षा ही उसमें आत्मविश्वास भरती है जिससे वह हर क्षेत्र में अपनी प्रभावपूर्ण छाप दर्ज कर रही है--

"अक्षर के जादू ने -

उस पर असर बड़ा बेजोड़ किया,

चुप्पा रहना छोड़

दिया, लड़की ने डरना छोड़ दिया।

हंस कर पाना सीख

लिया, रोना-पछताना छोड़ दिया।"[28]

:-कहानी का स्वरूप:-

गद्य के भीतर कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध, यात्रावृत्त, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, समीक्षा आदि सभी विधाएं आती हैं। इनमें से कहानी-, उपन्यास और नाटक को हम कथा साहित्य कहते हैं।

कथासाहित्य में किसी न किसी घटना क्रम के सन्दर्भ में प्रेम, ईर्ष्या, - रहस्य, रोमांच, जिज्ञासा और मनोरंजन संबधी भाव इनमें अक्सर मिलेजुले - होते हैं। कहानी का सम्बन्ध सृष्टि के प्रारम्भ से ही जोड़ा जाता है। मानव ने जिस दिन से भाषा द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति आरम्भ की होगी सम्भवतः उसी दिन उसने कहानी कहना और सुनना प्रारम्भ कर दिया होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

प्रारम्भ में कहानी में व्यक्ति के अनुभव सीधेसीधे कहे गये होंगे। -अर्थात् घटना या अनुभव को बॉटने की क्रिया ही कहानी बन गयी होगी। वास्तव में दो लोगों के बीच भूखईर्ष्या, जीवन और -आशंका, प्रेम-दुःख, भय-प्यास, सुख-सुरक्षा की भावना समान और सामान्यतः पायी जाती है। निश्चित ही दूसरों के साथ हुई घटना को सुनने और अपने अनुभवों को सुनाने की इच्छा आज भी हर एक मनुष्य के भीतर एक समान रूप से पायी जाती है। इसी सुनने की इच्छा ने कहानी का प्रारम्भिक रूप बनाया होगा।

स्पष्ट है कि मनुष्य के ज्ञान के साथसाथ कहानी का विकास भी - निरन्तर होता रहा है। मनुष्य के विकास का जो क्रम रहा है वही विकास कहानी के विकास का भी रहा है। जिस प्रकार आज मनुष्य का जीवन सरलता से अत्यन्त जटिलता की ओर बढ़ा, कहानी का रुप भी उसी प्रकार जटिल हो गया है। आज का जीवन तर्क प्रधान, बुद्धि प्रधान है, इसलिए कहानियां भी अब बुद्धि प्रधान हो गयी हैं।

कहानी का वर्तमान स्वरुप आधुनिक युग की देन है। भारत में कहानियां अपने अत्यन्त प्राचीनतम रुप में मिलती हैं। वेदों में हम भले ही कहानी के मूल रुप का आभास न कर पाएँ किन्तु उनमें कहानियों की व्यापक परम्परा रही हैं। महाभारत, बौद्ध साहित्य, पुराण, हितोपदेश, पंचतन्त्र आदि कहानियों के भण्डार हैं। पन्चतंत्र तो वास्तव में विश्व की कहानियों का एक स्रोत माना जाता है।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आधुनिक कहानी का यह स्वरूप अंग्रेजी साहित्य से होते हुए बँगला के माध्यम से हिन्दी को प्राप्त हुआ है। अपने प्राचीन रूप में गल्प, कथा, आख्यायिका, लघु कथा नाम से जानी जाने वाली कहानी का स्वरूप वर्तमान कहानी से बिलकुल अलग मिलता है। आजकल प्रचलित कहानियाँ मुख्यतः तीन रूपों में दृष्टिगत होती हैं जिन्हें कहानी, लघुकथा या लघु कहानी एंव लम्बी कहानी के नाम से हम जानते है।

-:कहानी, लघुकथा, लम्बी कहानी:-

हम ऊपर कहानी पर चर्चा कर चुके हैं। अब मैं कहानी के अन्य रूपों से आपको अवगत कराऊँगा। कहानी का दूसरा रूप है 'लघुकथा' और तीसरा 'लम्बी कहानी' है। आजकल इन रूपों में कई रचनाएँ प्रकाशित होती चली जा रही हैं और लोग इन्हें एक ही मानने की भूल करते हैं। वे सोचते है कि कहानी छोटी होकर 'लघुकथा' और आकार बड़ा होने पर 'लम्बी कहानी' हो जाती है, जबकि आकार मे औसत रूप में होने वाली कहानी ही कहानी है।

लघुकथा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए डा० पुष्पा बंसल ने कहा है "लघुकथा कहानी की सजातीय है, किन्तु व्यक्तित्व में यह भिन्न। यह मात्र घटना हैं, परिवेश- निर्माण को पूर्णतया छोड़कर पात्र-चरित्र-चित्रण को भी पूर्णतया त्यागकर विशलेषण से अछूती रहकर, मात्र घटना (चरम सीमा) की प्रस्तुति ही लघुकथा हैं। लघुकथा में प्रेरणा बिन्दु का विस्तार नहीं होता है, केवल बिन्दु होता है। लघुकथा मनोरंजन नहीं करती करती बल्कि मन पर आघात करती है। चेतना पर ठोकर मारती है और आँखों में उंगली डालकर यर्थाथ दिखाती है। लघुकथा में एक सुस्पष्ट नुकीला संवदेना-सूत्र प्रधान हो उठता है।"[29]

उक्त कथन के आलोक में कहा जा सकता है कि लघु कथा एकता, संक्षिप्ता, तीखेपन, व्यंग्य और घटना सूत्र के तीव्र प्रभाव पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसमें दूसरी ओर जीवन की गहरी जटिलता ने 'लम्बी कहानी' को जन्म दिया है। 'लम्बाई' पृष्ठ संख्या की नहीं, अपितु साहित्य के क्षेत्र में नई दृष्टि की सूचक है। यही नई दृष्टि 'लंबी कहानी' को कहानी से अलग-अलग करती है। घटना और परिवेश में, अंतर्द्वन्द्व में अर्थात् मनोभावों के चित्रण में विस्तार देकर चित्रित किया जाता है।

इसीलिए घटना का इकहरापन होते हुए भी उसके एक से अधिक कोण स्पष्टता से उभरकर हमारे सामने आते हैं और एक से अधिक पात्र भी उभर आते हैं। अर्थात् लम्बी कहानी में मुख्य पात्र के साथसाथ घटना से जुड़े अन्य - सन्दर्भों की गहनता को -पात्र परिवेश की सम्पन्नता में स्थित होकर जीवन निरंतर विस्तार एवं आयाम प्रदान करते है। इसे संक्षेप में हम समझ सकते है। लम्बी कहानी में क्योंकि घटना और पात्रों के सन्दर्भ में 'एकता' या एक पक्ष का पालन नहीं होता है, इसीलिए उसका आकार बढ़ जाता है किन्तु वह अपने कहानीपन को हमेशा अक्षुण बनाए रखती हैं।

यद्यपि कहानी जीवन के यर्थाथ से प्रेरित होती है तब भी इसमें कल्पना की प्रधानता अवश्य रहती है। इसमें रचनाकार अपनी बात सीधे न कहकर कथा के माध्यम से कहता है।

कहानी, हिन्दी में गद्य लेखन की एक प्रसिद्ध विधा है। उन्नीसवीं सदी में गद्य में एक नई विधा का विकास हुआ था जिसे कहानी के नाम से जाना गया। बंगला में इसे गल्प कहा जाता है। कहानी ने अंग्रेजी से हिंदी तक की यात्रा बंगला के माध्यम से ही की। मनुष्य के जन्म के साथ ही साथ कहानी का भी जन्म हुआ और कहानी कहना तथा सुनना मानव का आदिम स्वभाव बन गया। इसी कारण से प्रत्येक सभ्य तथा असभ्य समाज में कहानियाँ निरंतर पाई जाती हैं। हमारे देश में कहानियों की एक बड़ी लंबी और सम्पन्न परंपरा रही है।

प्राचीनकाल में सदियों तक प्रचलित वीरों तथा राजाओं के शौर्य, प्रेम, न्याय, ज्ञान, वैराग्य, साहस, समुद्री यात्रा, अगम्य पर्वतीय प्रदेशों में प्राणियों का अस्तित्व आदि की कथाएँ, जिनकी कथानक घटना प्रधान हुआ करती थीं। ये भी कहानी के ही रूप हैं। 'गुणढ्य' की "वृहत्कथा" को, जिसमें 'उदयन', 'वासवदत्ता', समुद्री व्यापारियों, राजकुमार तथा राजकुमारियों के पराक्रम की घटना प्रधान कथाओं का बाहुल्य है। प्राचीनतम रचना कहा जा सकता है। वृहत्कथा का प्रभाव 'दण्डी' के "दशकुमार चरित", 'बाणभट्ट' की "कादम्बरी", 'सुबन्धु' की "वासवदत्ता", 'धनपाल' की "तिलकमंजरी", 'सोमदेव' के "यशस्तिलक" तथा "मालतीमाधव", "अभिज्ञान शाकुन्तलम्", "मालविकाग्निमित्र", "विक्रमोर्वशीय", "रत्नावली", "मृच्छकटिकम्" जैसे अन्य साफ परिलक्षित होता है। इसके पश् चात् छो-काव्यग्रंथों पर साफटे आकार

वाली "पंचतंत्र", "हितोपदेश", "बेताल पच्चीसी", "सिंहासन बत्तीसी", "शुक सप्तति", "कथा सरित्सागर", "भोजप्रबन्ध" जैसी साहित्यिक एवं कलात्मक कहानियों का युग आया। इन कहानियों से श्रोताओं को मनोरंजन के साथ ही साथ नीति का उपदेश भी प्राप्त होता है। प्रायः कहानियों में असत्य पर सत्य की, अन्याय पर न्याय की और अधर्म पर धर्म की विजय दिखाई गई हैं।

-:कहानी का अर्थ और परिभाषा:-

कहानी का अर्थ:–

'कहानी' शब्द अंग्रेजी के 'शॉर्ट स्टोरी' का समानार्थी है। कहानी का शाब्दिक अर्थ है "कहना", इसी रूप में संस्कृत की 'कथ' धातु से कथा शब्द बना, जिसका अर्थ भी कहने के लिए प्रयुक्त होता है। कथ्य एक भाव है जिसे प्रकट करने के लिए कथाकार अपने मस्तिष्क में एक रूपरेखा का निर्माण करता है और उसे एक साँचे में ढाल कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है, वही 'कथा' कहलाती है या उसे ही कहानी कहते हैं। सामान्य बोलचाल की भाषा में 'कथा' और 'कहानी' शब्द एक पर्याय के रूप में जाने जाते रहे हैं; साहित्य के एक आवश्यक अंग के रूप में प्रसिद्ध -लेकिन आज कहानी कथा है।

कहानी की परिभाषा-:-

हम पहले ही बता चुके हैं कि कहानी पश्चिम से आई विधा है। अतः सबसे पहले पश्चिमी विद्वानों की कतिपय परिभाषाओं को लिया जा सकता है।

पाश्चात्य देशो में एडगर एलन पो आधुनिक कहानी के जन्मदाताओं में प्रमुख माने जाते हैं। उन्होंने कहानी को परिभाषित करते हुए कहा है कि-- “छोटी कहानी एक ऐसा आख्यान है, जो इतना छोटा है कि एक बैठक में पढ़ा जा सके और पाठक पर एक ही प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्यों से लिखा गया हो, वह स्वतः पूर्ण होती है।”[30]

हडसन के अनुसार कहानी की परिभाषा “लघु कहानी में केवल मूल भाव होता है। उस मूल भाव का विकास तार्किक निष्कर्षों के साथ लक्ष्य

की एकनिष्ठता से सरल, स्वाभाविक गति से किया जाना चाहिए। एलेरी ने कहानी की सक्रियता पर अधिक बल दिया है और कहा कि, वह घुड़दौड़ के समान होती है। जिस प्रकार घुड़दौड़ का आदि और अंत महत्त्वपूर्ण होता है उसी प्रकार कहानी का आदि और अंत ही विशेष महत्त्व का होता है।"[31]

इन परिभाषाओं पर यदि हम विचार करें तो पाते हैं कि कहानी में संक्षिप्तता और मूल भाव का ही महत्त्व होता है, जबकि कहानी के वास्तविक स्वरूप को ये पूर्ण नहीं करती। अतः यहाँ सर ह्यू बालपोल के विचार को समझना जरूरी हो जाता है। उन्होंने कहानी के विषय में थोड़ा अधिक विस्तार से बताया है।

पोल के अनुसार--"छोटी कहानी एक कहानी होनी चाहिए, जिसमें घटनाओं, दुर्घटनाओं, तीव्र कार्य व्यापार और कौतूहल के माध्यम से चरम सीमा तक सन्तोषजनक पर्यवसान तक ले जाने वाले अप्रत्याशित विकास का विवरण हो।"[32]

वस्तुतः ये परिभाषाएँ पश्चिम की साहित्यिक प्रवृत्तियों एवं विधा के अनुरूपों को उद्घाटित करती हैं। हिन्दी साहित्य में कहानी, बँग्ला कहानी साहित्य के माध्यम से साहित्य में आई। अतः कहानी में यहाँ का पुट भी शामिल हो गया। भारतीय समाज और संस्कृति का प्रभाव उसके स्वरूप में दिखाई देना स्वाभाविक था।

:-हिन्दी के विद्वानों का कहानी के सन्दर्भ में विचार-:

यहाँ हिन्दी के विद्वानों का कहानी के सन्दर्भ में विचार जानना भी आवश्यक है। अतः अब हम भारतीय विद्वानों के कहानी संबधी दृष्टिकोण पर विचार करते हैं।

मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार, "कहानी (गल्प) एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का -उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली तथा कथा विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।"[33]

बाबू श्यामसुन्दर दास का मत है कि, "आख्यायिका एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लेकर नाटकीय आख्यान है।"[34]

बाबू गुलाबराय का विचार है कि, “छोटी कहानी एक स्वतः पूर्ण रचना है जिसमें एक तथ्य या प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्तिकेंद्रित घटना या - कुछ अप्रत्ययाशित ढंग से उत्था-घटनाओं के आवश्यक, परन्तु कुछनपतन - और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतूहलपूर्ण वर्णन हो।”[35]

इलाचन्द्र जोशी के अनुसार "जीवन का चक्र नाना परिस्थितियों के संघर्ष से उल्टा सीधा चलता रहता है। इस सुवृहत् चक्र की किसी विशेष परिस्थिति की स्वभाविक गति को प्रदर्शित करना ही कहानी की विशेषता है।"[36]

जयशंकर प्रसाद कहानी को सौन्दर्य की झलक का रस प्रदान करने वाली मानते हैं।

रायकृष्णदास कहानी को किसी न किसी सत्य का उद्घाटन करने वाली तथा मनोरंजन करने वाली विधा कहते हैं।

'अज्ञेय' कहानी को 'जीवन की प्रतिच्छाया' मानते है तो जैनेन्द्र जी कोशिश करने वाली एक भूख' कहते हैं।

ये सभी परिभाषाएँ भले ही कहानी के स्वरूप को पूरी तरह स्पष्ट नहीं करती हैं, परन्तु उसके किसी न किसी पक्ष को जरूर प्रदर्शित करती हैं। हम विधा की कोई ऐसी परिभाषा देना -यह कह सकते हैं कि किसी साहित्य मुश्किल है जो उसके सभी पक्षों का समावेश अपने अंदर कर सके या उसके सभी रूपों का प्रतिनिधित्व कर सके। कहानी में साधारण से साधारण बातों का भी वर्णन हो सकता है। कोई भी साधारण घटना कैसे घटी? उसको कहानी का रूप दिया जा सकता है परन्तु कहानी अपने में पूर्ण और रोमांचक हो । जाहिर है कहानी मानव जीवन की घटनाओं और अनुभवों पर आधारित होती है जो समय के अनुरूप बदलते हैं ऐसे में कहानी की निश्चित परिभाषा से अधिक हमें उसकी विशेषताओं को जानने का प्रयास करना चाहिए।

3.2.-: <u>श्यौराज सिंह 'बेचैन' की कहानी में नारी:-</u>

डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' की 'हंस' कथा मासिक पत्रिका के अंक जनवरी, 2015 में प्रकाशित हुई 'हाथ तो उग ही आते हैं' नामक कहानी में तथाकथित

नस में जातिवादी व्यवस्था -सवर्ण जाति की सूतो चौधरिन के दिमाग की नस विद्यमान है, जिसके बरक्स जब वह अपने घर में काम करने के लिए खोद कर उनसे उनकी जाति पूछ -नौकरानी की तलाश करती है, तो वह खोद लिया करती है। उसकी अपेक्षा है कि उसके घर में जो काम करे, वह अछूत न हो।

प्रस्तुत कहानी में जिस नौकरानी का चित्रण हुआ है, वह रुक्खो है। जब चौधरिन रुक्खो से मिलती है तब वह अपने पति से चिंतित होकर कहती है कि- “जी मुझे तो यो बी भंगिनचमारिन सी लगे है।-"[37]

फिर उसका पति जातपांत को न मानते हुए उसे समझाता है कि "भंगिन है- या चमारीपोंछा के लिए क्या तुझे बाभनी, -, है तो देश की नारी ही। झाड़ू ठकुरानी,बनैनी या कायस्थनी मिलेगी? ये बातें भूलो और अपने फ़ायदे की सोचो।"[38] फिर इस तरह चौधरिन रुक्खो को काम पर रख लेती है।

प्रस्तुत कहानी की उपर्युक्त पंक्तियाँ महानगरों में पढ़ेलिखे सभ्य व प्रगतिशील - कहलाने वाले संपन्न वर्ग के लोगों की संकीर्ण मानसिकता को उजागर करती है कि आज भी उनकी सोच में जातिगत भेदभाव की भावना तथा दलितों के प्रति घृणा का जहर व्याप्त है।

रुक्खो के पति ने दंगों में अपनी जान गंवा दी है और उसका एक पुत्र है जिसको उस नौकरानी के एक मुसलमान चाचा उस बच्चे को संभालते हैं। इससे प्रतीत होता है इंसानियत का भाव अभी भी समाज में जिंदा है अर्थात् मुस्लिम चाचा अस्पृश्यता नहीं बरतते। एक दिन रुक्खो के चाचा को ईद मनाने के लिए गाँव जाना पड़ता है, फिर रुक्खो को समस्या आती है कि वह अपने बेटे को किस के पास छोड़े। तब वह अपने बेटे को मालकिन के घर पर ही काम पर ले आती है। इस बात पर सूतो चौधरिन बहुत गुस्सा करती है "तू अपने इस पिल्ले को जरा भूल कर काम में ध्यान दे। मुफ़्त - तो कर नहीं रहीं है ना।"[39]

इसी बीच सूतो चौधरिन के बेटे की मोटर साइकिल के पहिए से नौकरानी के बाहर खेल रहे बच्चे के हाथ कुचल जाते हैं। कथाकार ने यहाँ बड़ा ही मार्मिक और कारुणिक दृश्य प्रस्तुत किया है। यह सब देखते हुए वह मालकिन बड़ी चतुराई से झूठ बोलकर और थोड़े बहुत पैसे इलाज के लिए देकर उससे पीछा

छुड़ा लेती है।

प्रस्तुत कहानी में भिखारी का अड़ोसपड़ोस से कोई विरोध नहीं हुआ-, होता भी कैसेपीट और गा-? मारलीगलौच करना तो भिखारी का रोज का धंधा - "जे काले पेट को आदमी है, जा -चीख कर कह रही थी-था। किंतु अम्मा चीख को बेटा फेल है गओ तो मेरो न पढ़ जाय, जा मारे दारीज़ार ने किताबे जराई हैं, पर मैं आत्मा मसोस के कै रही हूँ भिकरिया बन्दे याद रखिये, ये सौराज ज़रूर पढ़ैगो और तू रूपा: तू कितनोऊँ जल मर, ये नाई पढ़ पावैगो।"[40]

प्रस्तुत प्रसंग में 'बेचैन' जी की मां अपने पति से श्यौराज की पढ़ाई को जारी रखने के लिए भी लड़ जाती है और कहती है मेरा बेटा पढेगा जरूर चाहे जो हो जाए उसकी पढ़ाई आगे भी चलेगी।

'क्या करे लड़की' नामक कहानी के माध्यम से लेखक समाज से प्रश्न करता है कि जब किसी गैर-दलित परिवार की लड़की किसी दलित लड़के से प्रेम कर बैठती है तो उसका परिवार व समाज उसका साथ क्यों नहीं देता या तथाकथित सवर्ण वर्ग के दिलोदिमाग में जाति जड़ जमाए बैठी है जिसके बरक्स आए दिन ऐसी हिंसक घटनाएं सामने आ रही हैं, जिनसे समाचार पत्र-पत्रिकाओं में ये समाचार भरे पड़े रहते हैं या फिर ये खबरें हमें आस-पड़ोस में भी देखने - सुनने को मिलती हैं।

प्रस्तुत कहानी में कीर्ति नामक पात्र के परिवार वाले उसके मनपसंद लड़के सत्यकाम के साथ विवाह के लिए राजी न होकर, किसी और अपनी ही जाति के राजेश नामक लड़के से उसकी शादी करने की सोचते हैं, क्योंकि वे इंटरकास्ट मैरिज के खिलाफ हैं। तब कीर्ति अपने घर से भागकर बाप ने चुना -आत्महत्या करने की सोचती है चूँकि वह लड़का, जिसे उसके माँ है। वह उसके साथ बदसलूकी करता है- "राजेश ने मुझे पूरी तरह लूट लिया और बाद में शादी करने से ना कर दी, बल्कि कहने लगा कि रास्ता खुल गया। अब हम ताउम्र दोस्त तो बने ही रह सकते हैं। शादी की भी कोई दरकार नहीं।"[41]

ऐसी परिस्थिति को जब वह अपने परिवार वालों के समक्ष रखती है तो उसका घर परिवार व समाज कोई साथ नहीं देता। तब वह आत्महत्या का रास्ता अपनाती है। आत्महत्या करने से, उसे रविराज और श्यामा बचाते

हैं और समझाते हैं कि आत्महत्या करना कायरपन है। उसे एक नई राह पर चलने की सलाह देते हैं।

प्रस्तुत कहानी में कथित सवर्ण समाज की कीर्ति के मस्तिष्क में भी जाति जड़ जमाए बैठी है। जब उसे पता चलता है कि रविराज दलित कौम से है तो उसका रविराज के घर में दम घुटने लगता है-"कीर्ति को लगने लगा कि अब उसका दम घुट जाएगा। खाना खाया, पानी पिया। कमरे में पूरी साफ सफाई, अच्छा बिस्तर, पंखा, कुलर, निम्न मध्य वर्गीय जीवन के हिसाब ठाक था। पर-से सब कुछ ठीक उसने दीवार पर टंगी आदिकवि वाल्मीकि की काल्पनिक तस्वीर देखी थी और देखते ही उखड़ने लगी थी।"[42]

"मेरी बहन का अपहरण किया गया था। मेरी माँ को गाय का गोबर चटाया गया था। ये सारी खबरें मैंने शहर में बैठेबैठे अखबारों में पड़ी थी। मैंने गाँव - जाने की योजना बनायी थी। जाति भेद कोई समस्या नही है कहने वाले साथियों को फोन पर फोन किये थे, सभी ने नये- नये बहाने बना दिये थे। तब विनीता ने कहा था तुम गाँव गये तो जिंदा नहीं लौट सकोगे और मैं तुम्हें खोना नहीं चाहूँगी।" [43]

श्यौराज सिंह बेचैन 'संदेश' कहानी के माध्यम से समाज में हो रही घटनाओं को ध्यान में रखते हुए पाठक को प्रेम विवाह के परिणामों से पाठक एवं समाज को जागरूक किया है।

"बेटा हमने अपनी माली हालत और अपनी सामाजिक हैसियत के अनुसार जितना कर सकते थे उससे अधिक ही किया। एकएक पायी जोड़कर घर - बनाया था। जो पेंशन का पैसा था सबकुछ तो तुम्हारे लिए ही था। हम तुम्हें 'मिडिल क्लास' बना पाए। अब तुम हाथ-पांव हिलाओ दिल - दिमाग से कमाओ तरक्की करो और तुम भी हाईक्लास बन जाओ। तरक्की का आसमान असीम है। जितना चाहो उड़कर दिखाओ।"[44]

बेचैन जी 'ओल्ड एज होम' कहानी के माध्यम से वर्तमान समय में समाज में घटित होने वाली घटनाओं के द्वारा समाज का ध्यान खींचा है कि किस कदर शहरों में ओल्ड एज होम का चलन बढ़ रहा है। लेखक आने वाले समय में समाज में वृद्धो के दु:खों का चित्र खींचा है।

"शीतल पास खड़ी थी। वह बता देना चाहती थी कि वह साक्षी है यह कोट भी निलामी से खरीदा गया था। उसके बाद पहन लिया गया था और दिल्ली में पहनने लायक नही रहा तो चाचा ने मुझे दे दिया था। कलावती को लगा कि सरकारी मदद मिलने में कोट बड़ी रुकावट है। तो वह कहने लगी"कोट के संग संग कमीच हूं उतारवाई दुंगी।- पर प्रधानजी हमारी सरकारी मदद मत रोको।"[45]

श्यौराज सिंह बेचैन ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से आज भी लाखों करोड़ों शीतल के सपने सरकारी आस में टूट रहे हैं जो मनुष्यता के लिए चुनौती माना जा सकता है।

"बुआ और दीदी ने घर में बात की तो पिताजी ने कहा कि जान चली जाए परन्तु हमारी बहन - बेटी एससी / एसटी के घर में नही जा सकती। परन्तु वे डरी नही और चुपचाप कोर्ट मैरिज करके चली गई तो पिता जी ने ठेके के हत्यारों को सुपारी देकर उनके पीछे लगा दिया.. और उन दोनों एससी / एसटी पर केस चला दिया।"[46]

बेचैन जी 'क्रीमी लेयर' कहानी के द्वारा वर्तमान समाज में आज भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखाई देता एक वर्ग विशेष समाज में समानता भाईचारा लाने के विरुद्ध कार्य कर रहा है। जो दकियानूसी विचारों से ग्रसित है।

"मुझे याद आ रहा है कुंवर का वह अनुदार व्यवहार, मसलन एक-दिन मैंने कहा था कि ये जुर्राबें ढीली हो गई हैं इन्हें हटा दो, कुछ नहीं तो कामवाले को ही दे दो। तो जनाब तपाक से बोलेढीली तो अब तुम- भी हो गई हो, तो क्या तुम्हें भी किसी कामवाले को ही दे दूँ? तुमने तो कोई वारिस भी नहीं दिया है तो क्या ....।"[47]

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी बस इत्ती सी बात कहानी के माध्यम से यह दिखाना चाहते हैं कि कुंवर साहब जैसे सामंती सोच के लोग आज भी लड़की को अपने समकक्ष नहीं मानते और तलाक देने के बाद भी पत्नी पर अपना अधिकार समझते हैं।

"जी, मैम मैं करूँगी।" मैंने चौक उठाया और सवाल हल कर दिया, तब बच्चें तो खुश हुए, पर मैम ने मुझे इशारे से क्लास के बाहर बुलाया। मैं बाहर

निकली उन्होनें क्लास के किवाड़ को फेरते हुए मेरा कान पकड़ कर इतनी ज़ोर से ऊमेठा कि मेरी चीख निकल गई। ऊपर से आँखे तरेर कर बोली, "हिमाकत करेगीदो सवाल -, मेरी बिना इजाज़त ब्लैक बोर्ड टच करेगी? एक हल कर लिए तो तीर मार लिया क्या? कितनी भी होशियार हो ले, रहेगी तो शैड्यूल्डकास्ट ही, औकात मत भूल। याद रख कि, तेरा बाप काम क्या करता है, जानती है? पानी भी नहीं पीते हैं तुम्हारे हाथ का हमारे लोग। तू रहती किस लाल बाग में है?"[48]

श्यौराज सिंह बेचैन की कहानी 'शिष्या-बहू' के द्वारा आज भी दलित समाज की लड़की गुलाबो को उसकी सास विद्या शर्मा ने कभी उसे स्वीकार नहीं किया और उसके माता-पिता के साथ दुर्व्यवहार करके जातीय श्रेष्ठता दिखाती है।

"सबके हिस्से का अकेले खा गई यह। दस साल तक कहती रही, अब मैं पत्रकारिता सीख रही हूँ, अब कम्प्यूटर इंजीनियरिंग। आये दिन खर्च के लिए पैसे की माँग। बेचारे बीस हज़ार कमाने वाले नाबर' की आधी कमाई नर्स की ट्रेनिंग की फ़ीस के नाम पर ठगती रही और उस धरनी धर जात का घर भरती रही। वैश्या भी देह का मोल लेती है और यह पगली देह, नेह और सब मुफ़्त में ही देती रही, यह कि प्यार में कुछ लिया नहीं जाता।"[49]

बेचैन जी 'लवली' कहानी के माध्यम से समाज में किस तरह से लड़कियों का व्यवहार बदल रहा है और वे बिना सोचे समझे प्रेम के झांसे में आकर एक लड़के से प्रेम विवाह कर लेती है जो कि पहले से ही शादीशुदा है अर्थात माता -पिता को बच्चों का ध्यान रखने के लिए प्रेरित करते हैं।

-:आत्मकथा का स्वरूप:-

आत्मकथा लेखन में लेखक के द्वारा कही गयी बातों पर विश्वास करते हुए उसको सच माना जाता है, क्योंकि उसके लिए लेखक खुद साक्षी एवं जिम्मेदार होता है। आत्मकथा लेखन आत्मकथाकार के जीवन के व्यक्तित्व उद्घाटन, ऐतिहासिक तत्वों की प्रामाणिकता तथा उद्देश्य के कारण महान होता है। आत्मकथा का उद्देश्य लेखक द्वारा स्वयं का आत्मनिर्माण करना होता है। आत्मपरीक्षण करना तथा उस के साथ-साथ अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित भी करना होता है। आत्मकथा का लेखक इसके द्वारा आत्मांकन, आत्मपरिष्कार तथा आत्मोन्नति भी करना चाहता है। इसका लाभ अन्य लोगों

को भी मिलता है। इससे अन्य पाठक भी अपने अनुसार कुछ प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं।

<u>आत्मकथा का अर्थ:-</u>

आत्मकथा को परिभाषित करने से पहले हमको इस शब्द की उत्पत्ति एवं अर्थ को जान लेना चाहिए। "आत्म यह शब्द आत्मन शब्द से उत्पन्न हुआ है। इस का अर्थ लिया जाता है 'स्वयं का' आत्मचरित, आत्मकथा, आत्मकथन इन शब्दों का सामान्यत: एक ही अर्थ लिया जाता है। "अंग्रेजी के Autobiography को ही हिन्दी में आत्मकथा या आत्मवृत्त कहा जाता है। आधुनिक हिन्दी शब्दकोश में "आत्मकथा शब्द 'स्त्री लिंगी' संज्ञा में लिया गया है, तथा उस का अर्थ 'स्वयं' द्वारा लिखा गया जीवन चरित्र, जीवनी, आपबीती, आत्मकहानी"[50] आदि इसका विकल्प स्वरूप लिया गया है। आत्मकथा की अवधारणा पर अनेक विद्वानों ने अपने-अपने विचार रखे हैं। इन विचारों के आधार पर यह कहा जाता है कि जो आत्मकथाकार होता है वह अपने जीवन की प्रमुख घटनाओं, मानवीय अनुभूतियों, भावों, विचारों तथा कार्यकलापों को निष्पक्षता एवं स्पष्टता से आत्मकथा में समाहित करता रहता है। इसमें उसके जीवन की उचित एवं अनुचित घटनाओं का सच्चा चित्रण होता है। उसमें लेखक स्वयं के जीवन की स्मृतियों को आत्मकथा के माध्यम से प्रस्तुत करता है, जो आत्मनिरीक्षण, आत्मज्ञान तथा आत्म-न्याय के आधार पर होती है। इसलिए आत्मकथा को हम सभी सम्पूर्ण व्यक्तित्व के उद्घाटन की विधा के रूप में भी स्वीकार करते हैं।

एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार-- "आत्मकथा, व्यक्ति के जिये हुए जीवन का ब्यौरा है, जो स्वयं उसके द्वारा लिखा जाता है।"[51]

आत्मकथा के लिए अंग्रेजी में 'आटोबायोग्राफी' शब्द प्रचलित है। जब लेखक स्वयं के जीवन का क्रमिक ब्यौरा पाठक के समक्ष प्रस्तुत करता है, तो उसे आत्मकथा कहा जाता है। आत्मकथा में स्वयं की अनुभूति होती है। इसमें लेखक उन तमाम बातों का विवरण देता है, जो बातें उसके जीवन में पहले घटी होती हैं। आत्मकथा में लेखक अपने अन्तर्जगत को बहिर्जगत के सामने प्रस्तुत करता है, इसमें एक आत्मविश्लेषण होता है।

आत्मकथा में लेखक अपने जीवन के बारे में बताता है तथा समाज के सामने स्वयं को प्रत्यक्ष रूप से इसके माध्यम से प्रस्तुत करता है। जिससे समाज उसके जीवन के पहलुओं से परिचित होता है। आत्मकथा विधा के कई पयार्यवाची नाम भी हमें देखने को मिल जाते हैं।

आत्मकथा की परिभाषा:-

हरिवंशराय बच्चन कहते हैं कि-- "आत्मकथा, लेखन की वह विधा है, जिसमें लेखक ईमानदारी के साथ आत्मनिरीक्षण करता हुआ अपने देश, काल, परिवेष से सामंजस्य अथवा संघर्ष के द्वारा अपने को विकसित एवं प्रस्थापित करता है।"[52]

डॉ. नगेन्द्र ने आत्मकथा को इस प्रकार परिभाषित किया है-- "आत्मकथाकार अपने संबंध में किसी मिथक की रचना नहीं करता कोई स्वप्न सृष्टि नहीं रचता, वरन् अपने गत जीवन के खट्टे-मीठे, उजाले अंधेरे, प्रसन्न-विषण्ण, साधारण-असाधारण संचरण पर मुड़कर एक दृष्टि डालता है, अतीत को पुन: कुछ क्षणों के लिए स्मृति में जी लेता है और अपने वर्तमान तथा अतीत के मध्य सूत्रों का अन्वेषण करता है।"[53]

अत: स्पष्ट है कि जब लेखक अपने जीवन का विश्लेषण, विवेचन स्पष्ट रूप से करता है, तब वह आत्मकथा कहलाती है। ये जीवनीपरक साहित्य का वह अन्यतम भेद है जो आत्मकथा लेखक साहित्यिक, राजनीतिक, धार्मिक कोई भी हो सकता है परन्तु लेखक का सर्वप्रतिष्ठित एवं सर्वमान्य होना अत्यंत आवश्यक है।

डॉ. साधना अग्रवाल के अनुसार-- "आत्मकथा लिखने की शर्त है ईमानदारी से सच के पक्ष में खड़ा होना और अपनी सफलता-असफलताओं का निर्ममता पूर्वक पोस्टमार्टम करना।"[54]

डॉ. त्रिगुणायत ने आत्मकथा की परिभाषा इस प्रकार दी है-- "आत्मकथा लेखक की दुर्बलताओं-सबलताओं आदि का वह संतुलित और व्यवस्थित चित्रण है जो उस के संपूर्ण व्यक्तित्व के निष्पक्ष उद्घाटन में समर्थ होता है। इसी परिभाषा से मेल खाती हुई परिभाषा डॉ. चंद्रभानु सोनवणे की है। वे कहते हैं- आत्मकथा वह गद्य विधा है जिस में लेखक निजी जीवन एवं व्यक्तित्व का सर्वांगीण अध्ययन तटस्थ एवं संतुलित दृष्टि से करता है।"[55]

डॉ. श्यामसुंदर घोष के अनुसार-- "आत्मकथा समय-प्रवाह के बीच तैरने वाले व्यक्ति की कहानी है। इसमें जहॉ व्यक्ति के जीवन का जौहर प्रकट होता है वहॉ समय की प्रवृत्तियॉ और विकृतियॉ भी स्पष्ट होती हैं। इन दोनों घात प्रतिघात से ही आत्मकथा में सौन्दर्य और रोचकता का समावेश होता है।"[56]

डॉ. यामसुंदर घोष की परिभाषा से यह बात स्पष्ट होती है कि-- "आत्मकथा से न केवल उस व्यक्ति की जीवन-कहानी का पता चलता है बल्कि समसामयिक परिस्थितियों के ऐतिहासिक तथ्यों के साथ व्यक्तित्व के गढ़ने में उन के सहयोग का भी पता चलता है।"[57]

3.3.-: श्यौराज सिंह 'बेचैन' की आत्मकथा में नारी:-

लेखक के पिता की बेवक्त मृत्यु होने के कारण पूरे परिवार का जीवन तहस-नहस हो गया था। ऐसे में भूख और गरीबी से निजात पाने के लिए लेखक के नाना ने पुत्री सूरजमुखी के दो पुनर्विवाह कराए पहला रामलाल से, और दूसरा 'भिकारी से। जबकि लेखक के दादा नहीं चाहते थे कि उनकी माँ का पुनर्विवाह हो। तब नाना ने परिवार वालों को सीधे-सीधे यह कह दिया-

"मेरी बेटी की उमर अभी बीसबाईस साल है। अभी उसने देखा - क्या है? हम बामन बनिये तो हैं नाँय जो पाट न करें और न हम चौधरी हैं, जहाँ जायदाद की कमाई बेटियाँ खाती रहें। हम चमार हैं। हमारे यहाँ यही होता है और फिर बेटी घर बैठी भी रहे तो किसके सहारे?"[58]

प्रस्तुत आत्मकथा में यह भी दर्शाया गया है कि ब्राह्मणों व सामंतों जैसी जटिलता यहाँ नहीं दिखलाई पड़ती जिसमें विधवा स्त्री जिंदगी भर दूसरों पर बोझ बनी रहती है। लेखक लिखता है कि-

पुरुष को परस्पर सहमति से -"पुनर्विवाह करना, विधवा विवाह करना या 'स्त्री जोड़ना हमारे यहाँ सामान्य प्रक्रिया थी। बाह्मणों जैसी जटिलता हमारे -छोड़ना भर दूसरों पर बोझ बनी -यहाँ आज भी नहीं है, जिसमें विधवा स्त्री जिन्दगी रहती है। अपनी माँ और बहन के वैधव्य के उदाहरण मेरी स्मृति में जिन्दा हैं। कम से कम मेरे सामाजिक परिवेश में विधवा विवाह का विरोध और सती प्रथा दलित स्त्रियों की समस्याएँ कभी नहीं रहीं हैं।" [59]

अतः यह दलितों की परंपरा अच्छी मानी जाएगी कि यहाँ विधवाविवाह का - प्रचलन है। जबकि वर्णों में विधवा विवाह का निषेध है।

इस घटना के बारे में श्यौराज सिंह लिखते हैं कि"छोटेलाल की - असहमति के बावजूद दोनों भाइयों ने मिल कर नकारात्मक योजना को कार्यरूप दिया। भिकारी ने तमतमाते हुए उठकर सिलौटी उठायी और दोनों

पट्टियाँ (तख्तियाँ) चौखट पर रखकर एकएक कर सिलौटी मार कर तोड़ीं - और स्कूल के थैले से किताबें निकाल कर जब फाडना चाहा, तो अम्मा ने लपक कर झटके से किताबें छीन लीं। तब भिकारी ने उछल कर माँ की छाती पर एक लात जमा दी और वह चौखाने चित होकर गिर पड़ी। उस वक्त ऐसा लग रहा था जैसे कोई भयंकर भूत या जिन्न भिकारी पर सवार है। मिट्टी के तेल की डिब्बी चूल्हे के ऊपर ताक में रखी थी। भिकारी ने किताओं पर तेल उँड़ेल कर माचिस की तीली दिखा दी। कितायें जल उठीं। पट्टियों ने भी आग पकड़ ली।"[60]

प्रस्तुत प्रकरण में बहन माया के विवाह का वर्णन है। बहन माया का विवाह भी घर की परिस्थितियों के अनुकूल न होने पर छोटी उम्र में ही करवा दिया जाता है। वर उनकी बहन से पंद्रह वर्ष बड़ा था। नापसंदगी का कोई सवाल ही नहीं उठता थागाँठ करके हो रही थी। अम्माँ -, क्योंकि शादी जैसे तैसे जोड़ ने लड़के के बारे में कुछ भी कहना चाहा, तो उन्हें इस तरह खरीखोटी सुना - "देख सूरजमुखी ! सुनि हमने खूब देखो, पर बिना बाप की लड़की तें कौन -दी सुन्दर लड़का शादी करेगो? घर में खाने को दाने नाँय शादी में दानदहेज कहाँ - से खर्च करेगी?" [61]

"ताई को ढड़ाइन के बारे में इल्म था। वह विचलित होकर बोली- "हाय रे बंगाली बाबा, इननें तो संखिया राँधि के खाइ लओ। "जा सौराज ने मेरी एक नाँय चलन दई। अब तो हम सब मन्न ही वारे है।" अम्माँ को पूरी तरह लगने लगा था कि हम कुछ ही देर के मेहमान हैं, आज हम सबके दिन पूरे हो गये हैं।"[62]

इन पंक्तियों में बेचैन जी ने ताई के माध्यम से नारी को प्रस्तुत किया है की वह जानती थी की ढड़ाइन खाने से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है इसलिए वह विचलित हो कर सभी से मदद मांगने लगती है।

"भिकारी हर रविवार को गंगा - स्नान करते थे। दूसरी ओर वे अम्माँ पर जुल्म भी ढाया करते थे। अम्माँ उनके व्यवहार और कर्मकाण्ड में गहरा - विरोधाभास देखती थी। वह कहती थी- "भिकरिया बन्दे तू - सुरग चाहतु है तो अपने करम संभारि। हर इतवार गंगा में डुबकी मारन तें तेरी बगुला भगति ते तेरे मन के पाप नाँय धुल जांगे।"[63]

इन पंक्तियों में लेखक ने भिखारी के विरोधाभासी व्यवहार को प्रस्तुत किया है जिसमें नारी अपने विचारों को प्रस्तुत करती है तथा उनको अपने अंदर छिपे विचारों को समाज के सामने रखती है।

"मेरो खून चढ़ा देउ डॉक्टर साहब। मैं बहुत तगड़ी हूँ।" अम्माँ का शरीर वाकई मजबूत था। यह नियामत उन्हें वंशानुगत थी। नानी - नाना बहुत लम्बे तगड़े थे। इसलिए उनकी सन्तानें यानी, पाँच बेटियाँ और दो बेटे भी शरीर रचना की दृष्टि से काफी हष्ट-पुष्ट थे। अम्माँ का खून छोटेलाल के खून से मेल नहीं खाया था तो मोल खरीदने के लिए माँ ने भिकारी से कहा था। भिकारी के पास पैसे नहीं थे। तब मेरे दिवंगत पिता राधेश्याम द्वारा बनाए हुए खडुओं पर अम्माँ का ध्यान गया था जिन्हें वे मृत पति की बतौर यादगार संभाल कर रखे थी। मुसीबत में काम आने के लिए उनके पास वही जमा पूँजी थी।"[64]

बेचैन जी ने इन पंक्तियों में अम्माँ के द्वारा नारी की चेतना व्यक्त की है जिसमें अम्माँ डॉक्टर से कहती है कि मेरा खून चढ़ा दो डॉक्टर साहब। मुश्किल समय के लिए बचा कर रखे गए गहनों को इलाज में खर्च कर दिया।

"माँ ने उनकी सेवा की थी। वह अच्छी खासी नर्स थी। बड़ी मौसी बताया करती थी कि जब उनके बड़े बेटे नत्थूलाल का जन्म हुआ था तब वह लम्बे समय तक बीमार रही। उस समय नत्थूलाल को अपना दूध पिला कर माँ की तरह ही पाला था। मुखी ने। छोटेलाल की सेवा में भी अम्माँ ने कोई कमी नही की थी। इस कारण वे माँ के एहसानों को महसूस करते थे।"[65]

इन पंक्तियों में बेचैन जी ने एक नारी के द्वारा किए गए त्याग, बलिदान एवं समर्पण को दर्शाया गया है जिसमें एक नारी खुद सक्षम ना होकर भी दूसरों के लिए तत्पर रहती है। यहां भारतीय नारियों के समर्पण का बखान किया गया है।

"माँ भुखमरी, बेकारी और भयंकर गरीबी के कारण बीमार रहती थी। पाली इस उम्मीद में छोड़ आई थी कि अब उसके बेटे उसका पेट भर सकेंगे। हालाँकि वह पाली से दसियों बार आयी और गयी, क्योंकि उसके तीन बच्चें वहाँ भी मौजूद थे।बेटे उन लोगों ने रोक लिये, और बेटी (मनोरमा) माँ के साथ थी । शरीर टी.बी. से जर्जर हो चुका था। माँ को लेकर हमेशा मेरा मन अपराधबोध- से भरा रहा। मैं मजबूर था कि कुछ नहीं कर सकता था, फिर

भी चाहता था कि मरने से पहले माँ सच सुन ले और मेरी किताब की तमन्ना को जान सके, और हो सके तो मेरे गुनाहों के लिए मुझे माफ कर दें।"[66]

बेचैन जी ने अपनी आत्मकथा में यह दिखाया है कि किस कदर माँ बीमारी से लड़ रही थी और मैं रोटी की लड़ाई में लगा था। लेखक कोई विशेष सेवा या मदद करने में असमर्थ रहा है।

"फसल के दिनों में कुछ लोग 'सिला' बीनने का ठेका ले लेते थे। ठेकेदार मर्द ही नहीं, औरतें भी होती थी। रामफूल की अम्माँ भी ठेका लेती थी। 'हम उन्हें दादी कहते थे।"[67]

लेखक ने बचपन के उन दिनों को याद किया है जब स्वयं माता के साथ ठेकेदारी के कार्यों में दिन-रात लगा रहता था और ठेकेदारी का काम पुरुष और महिला दोनों खेतों को काटने का ठेके लेते थे।

"सच तो यह है कि अम्माँ अपने बच्चों से एक पल भी जुदा नही रसना चाहती थी। यदि वह पाली छोड़ कर हमारे साथ आये तो पेट भरने और गोद में जो भिकारी का बेटा तेज सिंह और मेरा छोटा भाई रामभरोसे (जो अभी नादान ही था) है, उन्हें कैसे पाला जाए, इसका कोई रास्ता अम्माँ के पास नहीं था। फिर भी वह पाली से कभी छह महीने बाद, कभी वर्ष बाद हमारे पास नदरोली आ जाती थी।"[68]

बेचैन जी अपने बचपन की घटनाओं में बताते हैं कि बब्बा को कुछ कागज के टुकड़े पकड़ाकर उनकी जमीन को धोखे से ले लिया था। लेकिन दादी तुरंत डोरी लाल की चालाकी समझ गई और उसे फटकार लगायी।

"तो मैं हूँ तो देखूँ वे तीन सौ रुपया?" बब्बा ने अंटी से निकालकर वे कागज के टुकड़े दादी की ओर बढ़ा दिये। दादी को दखते ही बिजली-सा झटका लगा। परंतु उन्होंने अपने आपको संभाला और कहा-"जे रुपया है कै कागज है? उल्लू बनाए हो डोरिया ने तुम । ठगे गये हो।" [69]

प्रस्तुत प्रसंग में लेखक ने अपनी दादी की व्यवहार कुशलता का चित्रण किया है कि वह अशिक्षित होते हुए भी सामाजिक व्यवहार में पारंगत है।

"गंगावासी नही रहे। बहन विधवा हो गयी। अभी उसकी उम्र बीस भी नही थी। इसी माह हमने अपने बेटे विनोद को जन्म दिया था । पिता ने उसकी शक्ल तक नही देखी और संसार मे चल बसे।"[70]

यहां बेचैन जी ने अपने बहनोई गंगावासी की मृत्यु का वर्णन किया है कि उस समय बहन माया की उम्र लगभग 20वर्ष के करीब थी। ऐसी ही उम्र में उनकी मां भी विधवा हो चुकी थी भविष्य की चिंता मां को परेशान कर रही थी।

"सुनकर माँ ने एक बार फिर साहस दिया-, कहा 'वेटा नत्थू तू काहे कू निराश होत है। जे हमारी बेटी की तकदीर को लेखो 'है। बेटा, भगवान को मन मोई विधवा करि कें नाँई भरो, अब मेरी बेटी की दुनिया उजाड़ि के खुश होइगो भगवान। बेटा मैं जानती हूँ एक गरीब विधवा की जिंदगी कैसी होति है। बिना केवट की नाव-सी। पर तैने तो भलाई करी, मदद करी। हम उन्हें बचाई तो नहीं पाए, अब हम उनकी लाश चीरफाड़ को दें ठीक नाँय होएगा।-"[71]

बेचैन जी ने माता जी के साहस को भी सलाम किया है तथा डॉ. नत्थू लाल का हौसला बढ़ाया कि जो होना था वह तो हो चुका आगे ईश्वर है क्योंकि आपका जो फर्ज था उसको तुमने पूरा किया।

"ताई अपने गुनाहों के लिए क्षमा माँग कर पुनः अपना लेने की विनती करने लगी। ताऊ भी बेसहारा थे। उन्होंने ताई को अपना लिया और बाकी जीवन एक साथ गुजार दिया।"[72]

बेचैन जी ने अपनी आत्मकथा में दादी माँ का वर्णन किया है कि जब उसने गलती मानी तो बब्बा ने उसे अपना लिया लेकिन सवर्ण समाज में महिलाओं को त्यागने पर फिर नहीं अपनाया जाता है।

जिन्हें हम 'दादी' कहते, ऐसी तेलिन जब मूड में होती तो अन्योक्ति के माध्यम से गालियाँ देती। कभी भैंस से कहती-- "पी-ले पानी पी ले, तोई चमार चीरे। कभी कुतिया को डंडा मारते हुए बोलती - "कैसी चमरिया - सी निठल्ली बैठी है। उठि, नाइ तो टांगे तोड़ चमरियाने में फिंकवाह दिउँगी।"[73]

बेचैन जी ने आत्मकथा में दिखाया है कि किस तरह से गांव में पासपड़ोस में - बात में ताने मार कर उनका जीना मुश्किल कर -किस तरह से महिलाएं बात दिया था।

“होटल में काम करने वाले बच्चे भूखो नही मरते, ऐसी उनकी समझ थी। परंतु मौसी खिलाफ थीं। वे नहीं चाहती थी कि उनकी बहन का लड़का दूसरों के जूठे बर्तन धोए। इसके साथ दूसरा प्रश्न यह था कि मौसा जी ने अम्माँ से वायदा किया था कि यहाँ सौराज को खाली समय में थोड़ा- बहुत पढ़ने का मौका मिलेगा।"[74]

लेखक अपनी आत्मकथा में लिखते हैं की मौसा ने मुझे काम के लिए होटल में रख दिया था लेकिन मेरी मौसी इस कार्य के लिए तैयार न थी क्योंकि मौसी मेरे भविष्य को लेकर चिंतित थी।

'मौसा जी ने मेरी दु:खती नस दबा दी। मैं कातर दृष्टि से मौसी की ओर देख रहा था। मौसी बहुत उदार हृदय थीं। उन्होंने मुझे अपनी ओर खींचा और पीठ पर हाथ रखकर बोलीं "बोल अब तो- कहूँ नहीं जाएगा बिना बताए?"[75]

बेचैन जी दिल्ली में रहने के दौरान मैं एक दिन साइकिल से गिरकर घायल हो चुका था और मैं घर से थोड़ा समय बाहर रहा तो मौसी ने मेरा बचाव किया था। लेखक ने आत्मकथा में लिखा है कि दिल्ली में नींबू बेचते समय एक महिला ने मुझे कुछ कपड़े दिये मेरे मना करने के बाद भी उसे महिला ने वापस नहीं लिये।

"तब तक किशोरी ने कहा - देखो भाई, तुम्हारी आंटी मना करे तो तुम कल वापस ले आना या किसी और फेरी वाले को दे देना । इतना कह कर वह ठहर गई, पर अब मेरी समझ में उसकी बात आ गई। ठीक है ले लेता हूँ। "[76]

बेचैन जी ने उस महिला का वर्णन किया है जिसने उनके साथ अच्छा व्यवहार किया था। उसको बेचैन जी अपनी कविता का विषय भी बनाते हैं।

"उस महिला के शब्दों में अतिशय ममता थी। शायद उसे दत्तक पुत्र के रूप में मेरी जरूरत रही हो। उनका मुलायम और मीठा स्वर कठोरता और रूखे व्यवहारों से हमेशा घायल रहे मेरे हृदय के लिए मरहम जैसा था।"[77]

यहां बेचैन जी प्रस्तुत पंक्ति में यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि किस तरह मां बच्चों के लिए बेचैन रहती थी। वे पंजाबी दंपति की चर्चा करते हैं कि किस कदर वह महिला मुझे दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार करना चाहती थी। यह बहुत ही स्वाभाविक है क्योंकि शहरों में बिना बच्चा पैदा करे मां बनने की परंपरा शुरू हो चुकी थी।

"पर बुढ़िया माता जब लड़ती तो कहती- "जवानी के नशे में सब लुटा दिया खिला दिया उस कुत्तिया को चार पैसे जोड़े जमा किए होते तो आज काम आते या नहीं..." ताऊ अकेले में कहते थे --माताजी पुराने घाव कुरेद - कुरेद कर बाबूजी को परेशान क्यों करती हो? एक तो वे बीमार रहते हैं फिर भी दुकान पर बैठते हैं।"[78]

यहां बेचैन जी एक महिला के दु:खों का वर्णन कर रहे हैं कि किस तरह मर्द पराई औरतों के लिए अपनी धन दौलत सभी लुटा देता है। उसी की पीड़ा को यहां रेखांकित किया गया है।

"मैं जानता हूँ बाबूराम" सब जानता हूँ। यहां सब लोग कहते हैं- शर्मा जी का कोई ईमान-धर्म नहीं है। सगी सलैज को घर में दे रखे हैं। उनकी पत्नी रोज-रोज रोती, कहती- भैया बाबू इन्हें नेंक तू ही समझाइ अब तो बात जिजमानों तक पहुँचने लगी है। रात - दिन बाई तें जाइ चिपकत हैं। मेरी बेटियां बड़ी हो रही है का सोचती होंगी? कोई नाते रिश्तेदार सुनेगा तो क्या कहेगा?"[79]

यहां बेचैन जी ने कपटी-पाखंडी शर्मा जी का चरित्र चित्रण किया है जो खुद साली को घर में बैठा रखा है। पत्नी के रहते रखैल रखना कितना उचित है।

“कर्णवास में गंगाघाट पर देवी के मन्दिर पर इसी वर्ष बड़ा भारी उपद्रव हुआ था। बदमाशों ने स्त्रियों के साथ बेजा वीभत्स व्यवहार किया था। एक युवती ने जिसकी चार दिन बाद ही बारात आने वाली थी, बदमाशों की छेड़खानी का विरोध किया तो तैश में आकर गुण्डों ने चाकू से उसके स्तन काट दिए थे। मैं उस मेले में जूते पालिश करने गया था।"[80]

यहां समाज में डाकू लुटेरों के द्वारा किस तरह महिलाओं के साथ घिनौना दुरव्यवहार किया जाता है। वह घर या बाहर हर जगह सुरक्षित नहीं रहती है। कर्णवास के मेले में एक महिला का स्तन गुंडों द्वारा काट दिया जाता है।

'मीनू' ने उस दिन कहा था "अजीब- बात है! कही कोई राज-मिस्त्री मिलता है तो कहते हो मैं भी राज था। नींबू खरीदने जाओ तो कहते हो मैं भी नीबू बेचा करता था। अखबार डालने वाले को बताते हो कि "मैं दूसरी मंजिल पर पेपर-नही फेंक पाता था। उस दिन होटल में खाना खाने गये तो कहने लगे, दिल्ली में मैं भी होटल में बर्तन साफ किया करता था। अब मोची मिला तो कहते हो जानापहचाना लगता है।-" क्या-क्या करते रहे थे तुम शादी से पहले? यह सब बताया क्यों नहीं था?"[81]

श्यौराज सिंह 'बेचैन' की पत्नी रजत रानी मीनू श्यौराज की आपबीती सुनकर आश्चर्य में पड़ जाती हैं कि बचपन में तुमने सहर्ष सभी कार्यों को स्वीकार किया। आपने कौन-कौन कार्य किया?

"जब वे हवेली की सीढ़ियाँ चढ़ते थे तो सीढ़ियों की दोनों ओर पंक्ति बना कर किशोरियों की भीड़ खड़ी हो जाया करती थी। ये किशोरियाँ अपनी छातियाँ अनावृत करके नवाब को सहयोग किया करती थी। नवाब साहब उनके स्तन पकड़-पकड़ कर सीढ़ियां चढ़ा करते थे। कहा यह भी जाता था कि हिंदुओं में कथित ऊंची जातियां नवाबों के घरों में अपनी बेटियाँ ब्याह दिया करते थे। यह परम्परा अकबर -जोधा के ब्याह से आरम्भ हुई थी।"[82]

यहां बेचैन लखनऊ के नवाबों के अय्याशी भरे व्यवहार का वर्णन किया है कि वह किस कदर महिलाओं के आबरू के साथ खेला करते थे उसका वर्णन यहां किया गया है कि किस कदर सामंती व्यवस्था महिलाओं की अस्मिता को तार - तार करते हैं।

" मोहू अपनी छाती पै सौति शिला बैठा बनी पसन्द नाई। का कोई आँखिनु देखि मक्खी निगलतु है। मैंने चुडैल की पीठ पै बेलन दै मारौ। तो मेरो आदमी वाई की साइड ठाड़ौ है गयौ। न तब मैंनें गुस्सा में भरि के कही या तो या बदमाश कूँ यही वक्त घर ते बाहर लिकारि नाँय तो मैं जहर खाइ लिउँगी या घर में आग लगाई दिउँगी।"[83]

बेचैन जी यहां सौत की पीड़ा का वर्णन करते हैं जब मर्द पराई नारी के चक्कर में पड़ जाता है तो घर में सुख शांति का सत्यानाश कैसे होता है? वह यहां दिखाया है।

" 'वेद' ने मेरे मैले कपड़े देख कर और यह जानकर कि मैं गंगी चमार का नाती हूँ- हवन स्थल से कुत्ते की तरह दुत्कार कर बाहर कर दिया था। मैं आज तक उनके व्यवहार को भूला नहीं, पर कदाचित उन्हें वह घटना याद भी न हो, जबकि उनकी गायन-कला का मैं प्रशंसक था।"[84]

लेखक ने अपने गांव की शर्मा जी की लड़की वेदवती का वर्णन यहां किया है वह मुझे गंदे कपड़े में देखकर इतना भला बुरा सुनाती है कि मैं वहां से चला गया और आज तक उसका व्यवहार मुझे याद है।

अम्मा ने बताया- लल्ला, आज प्रेमलपाल मास्टर आये थे, कह रहे थे कि "दादी अभी भी समय है, तुम श्यौराज को स्कूल भेजने की सोचो।" "तो तुमने का कही?" मैंने प्रश्न किया। तो अम्मा ने बताया- "मैंनें मने कर दई ।" "मनें क्यों कर दई? "तू स्कूल जाइगो तो खाइगो कहाँ ते? कमाइ के खवावन कूँ का तेरो बापु सुरग तें लौटिके आवेंगो?"[85]

यहां पर श्यौराज सिंह बेचैन अपने शिक्षा रूपी सफर का वर्णन करते हैं कि जब पहली बार प्रेमपाल मास्टर साहब घर आए थे और माँ से पढ़ाई के बारे में बताया था और मां ने मना कर दिया था। मेरे कठोर निर्णय का जवाब मेरी माँ ने भी कठोरता से ही दिया था।

वह बोली : "आज से मैं समजुंगी कि सौराज मरि गओ। मैंने एक बेटा पैदा ही नाँय करो, मैंने नौ महीना अपनी कोख में एक पत्थर ढोओ। आज से सौराज पूरी बस्ती कूँ मरे के बराबर है। अब तू जो मन में आवै सो करि । जब पढ़न की उमरि रही तब तो पढ़ि नाँय पाओ अब दुए रोटी को काम अन्न लाक भओ है तो मिस्त्री के औजार छोड़ि कें कलम चलावैगो।"[86]

यहां बेचैन अपनी पढ़ाई की ज़िद के लिए घर परिवार सभी की कुर्बानी देने के लिए तैयार थे। इन सब बातों को सुनकर उनकी मां ने कठोर निर्णय का जवाब कठोरता के साथ ही उत्तर दिया था।

'बऊ' तो यहाँ तक कहती थी कि, "पांडे जी' से कहकर किसी गरीब गुरबा यैर की लड़की लाउंगी सौराज को। अब सौराज चमार कहां रह गओ है। मेरो बालकु है मैं ही जाकी माँ हूँ मैं ही जाको बियाह करउँगी।"[87]

बेचैन जी ने यहां प्रेमपाल सिंह मास्टर जी की पत्नी अनौखिया उर्फ बऊ तो कभी मुझे अपना पुत्र कहती थी यहां तक कि अब मुझे चमार नहीं बल्कि यादव कहकर मेरी शादी भी यादव में कराने की बात करती थी।

"शाम को मैं लाठी के सहारे लँगड़ाता हुआ फिर अनोखियाँ 'बऊ' के पास गया। इस उम्मीद से कि वे मुझे खाना खिला देंगी। परन्तु बऊ ने उल्टा इस बात का ताना सुना दिया कि- पाँउ काटि लाए, अब खेत कौन जोतेगो ? घर खाली पड़े कहाँ ते खाउगे?"[88]

यहां श्यौराज सिंह बेचैन अनौखिया बऊ के बदले हुए व्यवहार का वर्णन करते हैं जो मुझे कभी यादव एवं खुद का बेटा बताती थी लेकिन जैसे ही मेरा पैर हल से कटा उसी दिन उनका व्यवहार बदल गया।

" छोटी कह गयी है कै मेरे भतीजे कू तारी मत दे दइयौ। का पढ़िवे के चक्कर में पड़ौ है, कह दइयौ भट्ठे पै आइ जाइ खाली किताबें पलटिवौ छोड़ि, खाइवे-कमाइवे की सोचे। मुझे लगा यह खुर्राट बुढ़िया झूठ बोल रही हैं।"[89]

"यह सब अनौखिया बऊ ने देखा तो सवाल किया- "श्यौराज के लत्ता काए कूँबाह रख दये? "तो उन्होंने कहा-"हमारे यहां यादवों के घरों में चमार की कोई चीज आंगन के भीतर नहीं आती है। आप लोग उसके कपड़े अंदर रखते ही क्यों हैं? वह कोई हमारी जाति का है?"[90]

बेचैन जी ने यहां प्रेमपाल जी के घर का वर्णन किया है कि- प्रेमपाल सिंह के साथ जब दूसरी पत्नी आशा का विवाह हुआ तो वह घर आते ही सबसे पहला कार्य बेचैन जी के कपड़े घर में रखें उसे निकालकर बाहर फेंक दिया था। ऐसे व्यवहार को देखकर अनौखिया बऊ उससे लड़ जाती है।

"मैं गाँव पहुँचा तो ताई ने मुझे बुलाया-"रोटी खाइं लै।" मैं समझा नहीं। ताई मेरी सहयोगी कभी नहीं थी। वह चूल्हे की आग तक नहीं देती थी। मुझे रोटी खाने बुला रही है।"[91]

बेचैन जी ने अपनी उस दादी का वर्णन यहां किया है जिसने कभी चूल्हे से आग भी नहीं दी थी लेकिन जैसे मेरे शादी की बात चलती है तो वह पहली बार मुझे प्रेम से बुलाकर खाने के लिए कहती है।

"सुन्दरिया ने एक दिन कहा" तुम चिंता छोड़ो-, अपनो सामान मेरे घर में धरि जाओ। मैं सँभाल के रख लूँगी। अगली साल तुम्हारी बुआ अपने घर में रैन दें या नांय रैन दें और हरदिला के घरऊ नाँइ रेउ तो तुम्हें बासन, लत्ता और किताबे सब मिलाइ कें कुल एक बोरीभर सामान है। याद रखियो तुम्हें जब - चाहो मेरे घर में आधी रात जगह मिलेगी।"[92]

"करीब एकडेढ़ महीने मैं वहाँ बीमार हालत में रहा। बहन- ने माँ से बढ़ कर मेरी सेवा की। सरल और शान्त स्वभाव की मेरी निरक्षर बहन मेरे बहुत से दु:खों में साझीदार रही। रात-दिन गर्म पानी के सेंक और तेल-मालिश से बहुत राहत मिली। बीस- पच्चीस दिनों में मैं जैसे ही कुछ चलने लायक हुआ, वापस अपने गांव और लौटने की सोचने लगा।"[93]

उपरोक्त पंक्तियों में श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी यह बताना चाहते हैं कि- किस तरह से एक बहन ने एक मां की तरह मेरी बीमारी में साथ दिया तथा मेरी खूब सेवा की थी।

3.4-: <u>श्यौराज सिंह बेचैन के उपन्यास और अन्य साहित्य में नारी: --</u>

दलित स्त्रियों के दु:ख अपार हैं गैर दलित लेखिकाएं उनके दु:ख उनसे सुनकर दूर से देखकर, जब सफरिंग का साहित्य लिखने का दावा कर रही है तो दलित स्त्री अपने भोगे हुए अनुभवों की पूंजी को समाज परिवर्तन के अभियान में क्यों नहीं लगा सकती? दलित स्त्री विमर्श में गैर-दलित स्त्री की तुलना में दलित पुरुष सौ गुना बेहतर सोचेगा - लिखेगा और स्वयं दलित स्त्री लेखन गैर-दलित स्त्री से शत-प्रतिशत अच्छा और दलित पुरुष से ज्यादा प्रमाणिक लिखेगी। भाषा - शैली कला-सौंदर्य अभ्यास के साथ आ जाएंगे।

श्यौराज सिंह बेचैन ने अपने साहित्य में वर्णन करते हैं " दलित स्त्रियों का उच्च शिक्षा में प्रतिनिधित्व हजार में एक भी नहीं है। पूरे देश के तीन सौ चौसठ विश्वविद्यालयों में एक भी दलित कुलपति नहीं है। प्रोफ़ेसर भी नहीं है। राष्ट्रीय दैनिक समाचार-पत्रों में हजारों महिलाएं कार्य करती हैं संपादकीय विभाग में, तकनीक विभाग में रिपोर्टिंग इत्यादि में। वर्षों से मेरी नजरें उन्हें ढूंढ़ती रही है। वे झाड़ू लगाने संपादकों के कप प्लेट धोने उनकी रद्दी इकट्ठी करने के अलावा वहाँ वे किसी भी सम्मानित पद पर नहीं है।"[94]

दलित स्त्रियाँ अपने पत्र-पत्रिकाएं निकालने की जिम्मेदारी संभाल सकती हैं वे "गैर दलित, सुविधा-भोगी लेखिकाओं को स्त्री विमर्श का असली पाठ सिखा सकती हैं शिक्षा में, सिनेमा में, मीडिया में, समाज और राजनीति में हर जगह दलित स्त्री का हिस्सा गैर-दलित स्त्री ने खा लिया है। किसी दलित पुरुष ने नहीं। सवर्ण महिलाएं वंचित - दलित महिलाओं की क्षतिपूर्ति कर सकती हैं।"[95]

"नही हैं तो शिक्षा, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कला संस्कृति, सिनेमा में नहीं है। मीडिया में तो उन्हें मृणाल पांडे जैसी डेमोक्रेटिक संपादक की जगह नहीं दे सकती। दलित स्त्रियां उन अशरीरी अस्पृश्यता की वैसी ही शिकार है जैसे दलित पुरुष।"[96]

दलित महिलाओं के लिए चिंता का विषय यह जानना है कि दलित समाज के समर्थ पुरुष-जैसे अधिकारी, राजनेता, प्राध्यापक और कुछ लेखक अपने दलित समाज में विवाह, पुनर्विवाह क्यों नहीं करते हैं? इसके लिए वे सवर्ण समाज में क्यों जाते हैं? यदि उन्हें जाति तोड़ने के लिए यह सब करना होता है तो नौकरी से पहले, राजनीति में स्थापित होने से पूर्व या साहित्य में आप जब नहीं होते तब क्यों नहीं करते? क्या किसी सवर्ण की कमेरी लड़की ने बेरोजगार दलित से शादी की है?"[97]

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने 'परिषद' की रिपोर्ट मूकनायक (05/06/1920) में प्रकाशित की। परिषद के प्रस्ताव संख्या 6 में बाल-बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा मुफ्त और अनिवार्य करने की मांग की गई थी। महिला प्रतिनिधि सौ बंदसोड़े (तुलसीबाई) ने अपने भाषण में दलित समाज की स्त्रियों के अशिक्षित (गरीब) होने के कारण घरों में बच्चे छोड़कर मजूरी पर जाने की विवशता वह चिंता व्यक्त की। उन्होंने लड़कियों के लिए छात्रावासों के निर्माण की मांग की।"[98]

"सौ. पंडिता 'मनोरमाबाई' के विचारों को भी 'मूकनायक' ने दर्ज किया कि -- " जब समाज का अर्धांग स्त्रियां है तो वह यदि अशिक्षित रही, तो समाज-सुधार व उन्न ति हुई है हम ऐसा नहीं मान सकते। घर की व्यवस्था, बच्चों का लालन -पालन की जिम्मेदारी स्त्री पर होती है इस हेतु अशिक्षित स्त्री की उपेक्षा सुशिक्षित स्त्री श्रेष्ठ समझी जाती है।"[99]

२० जुलाई १९४२ को नागपुर में हुए 'अखिल भारतीय दलित वर्ग महिला सम्मेलन ' में पारित 8 प्रस्तावों में स्त्रियों को संपत्ति में अधिकार, तलाक लेने का अधिकार, पुरुषों की बहुपत्नी प्रथा की संपत्ति, स्त्री-शिक्षा व विधान-मंडलों में आरक्षण की व्यवस्था प्रमुख मुद्दे थे। यह प्रस्ताव हस्तगत कर अंबेडकर ने महिलाओं को आश्वस्त किया था कि --" मैं आपके यह प्रस्ताव असेंबली में रखूंगा।"[100]

"दलित पत्रों की तरह दलित संवेदना में शरीक 'दिनमान' के संपादकीय (9.15.3.1980) ने लिखा- " जमीन की मजूरी और औरत के स्वाभिमान की लड़ाइयां एक ही लड़ाई के हिस्से हैं। जिनकी जमीन और मेहनत छीनी गई है। उसकी औरत भी छीनी जाती है। ताकतवर लोग भूमिहीनों की औरतों को रख़ैल बनाते हैं। और इसी के विरुद्ध पिपरा के हरिजन लड़ रहे थे।"[101]

'बहुजन संगठन' बराबर इसी दिशा में अपनी वैचारिकता स्थापित करता है। उसने मार्च १९८३ के एक विशेष लेख में इतिहासकारों पर आरोप लगाया कि -" इस देश के जातिवादी इतिहासकारों ने १८५७ कीझांसी की वीरांगना झलकारी बाई को भुला दिया"[102]

"भारत की आजादी के बहुत सारे क्रांतिकारियों के योगदान को बुलाने का प्रयास किया गया है। जो अनुचित है। ' विश्वप्रिया आयंगर ' शायद सही कहती है कि - "तीसरी दुनिया की यह औरतों की है त्रासदी है कि वह अनेक विषयों पर बातें तो कर सकती हैं स्वयं अपने बारे में नहीं बोलती।"[103]

यह आरोप कुछ सच हो सकता है कि - "दलित महिलाओं के साथ बलात्कार बढे हैं और दलित नेता संसद में बैठे सच को दबाते रहे हैं। वह चुप है कि पता नहीं कब उनकी झोली में मिनिस्ट्री आ गिरे। " स्त्री यहां केवल दलित जातियों की ही नहीं बल्कि सामंती घरानों की स्त्रियां भी परंपराओं के गालों में समाती रही है। रजत रानी मीनू के अनुसार - " १९८६ मैं सतीप्रथा उन्मूलन कानून बना लेकिन व्यवहार में रूप कुंवर सती काण्ड (१९८८) जैसी घटनाएं रोकी नहीं जा सकी।"[104]

अन्यथा 40 दिन तक की बच्ची के साथ बलात्कार की घटना गैर-दलित समुदाय में हुई। विष्णु नागर के शब्दों में - " वह बच्चे हो या 60 साल की बूढ़ी औरत बलात्कार तो स्त्री जाति का घृणित अपमान है।"[105]

वर्तमान समय में हवाई जहाज में एक गैर दलित पुरुष एक बूढ़ी औरत के ऊपर पेशाब कर देता है तथा कुछ दिन बाद ही मध्यप्रदेश में एक आदिवासी पुरुष के ऊपर एक गैर-दलित ब्राह्मण पेशाब करते हुए वीडियो वायरल होता है। ऐसी घटनाओं का अनुपात बढ़ रहा है।

हम जब प्रतिभा, बल और दूसरे क्षेत्रों में पुरुषों से आगे कहलाने वाली महिला का उल्लेख करते हैं तो वह संभ्रांत, सवर्ण जाति की स्त्री होती है और जब उत्पीड़न अत्याचारों की शिकार महिलाओं की गणना करते हैं तो वे दलित महिलाएं होती हैं, जो दलितों में भी महादलित हैं। घर बाहर की समस्या को एक गैर दलित कवि रघुवीर सहाय की कविता बेहद सुंदर ढंग से रखती है--

"पढ़िए गीता, बनीए सीता फिर इन

सब में लगता पलीता

निज घर बार बसाइए।"[106]

"बदलते परिवेश में नारी का बदलता स्वरूप" शीर्षक से 'अक्षर का वजन' सा. ने १७ मई, १९९३ के अंक में यह प्रश्न डिस्कस किया। लेकिन वह भी वैदिक-काल की गार्गी, मैत्रेयी, अनुसूइया, सीता, सावित्री, द्रौपदी, दमयंती, राधा, रुकमणी के क्रम में आधुनिक इंदिरा गांधी, सरोजिनी नायडू इनमें एक भी दलित नारी नहीं है।"[107]

ऐसा कैसे हो सकता है जबकि हमारा इतिहास हमेशा पराक्रमी रहा है लेकिन एक साजिश के तहत उसे दबाया जाता है जिससे इस समाज में आत्म गौरव का भाव पैदा न हो सके।

नीलम कुलश्रेष्ठ 'हंस' (के जून, ९३, पृष्ठ - ७३ के अंक में) कहती हैं कि-- "मैं भी स्त्री को दलितों से जोड़े जाने का विरोध करती हूँ। वे तर्क देती है कि जिस तरह दलितों का पीढ़ी-दर-पीढ़ी शोषण एक बड़ी साजिश है उसी तरह स्त्री की शक्ति को नकार कर उसे दलितों से जोड़ना या अपने से कमतर चीज बना देना, पुरुष अह की भारी साजिश है।"[108]

अर्थात यहां लेखिका का यह आशय है कि वह लाचार, बेचारी विवश की शिकार से ऊपर उठ चुकी है वह पुरुष समाज के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चल रही है इसलिए यह उसका अपमान है।

दलित पत्रकारों की स्त्री विषयक वैचारिकता व व्यवहारिकता में गहरा विरोधाभास मिलता है वह स्त्री की तमाम दुर्दशा का कारण 'मनु' को बताते हैं। लेकिन यथार्थ में 'मनु' की बंदिशें ब्राह्मण स्त्रियों पर कम दलित स्त्रियों पर अधिक लदी है और दलितों द्वारा भी। शिक्षा, नौकरी, कला साहित्य, राजनीति और पत्रकारिता में उन वर्गों की महिलाएं ही दिखती है जिन्हें वे मनुवादी कहते हैं और दलित स्त्रियों की जीवन के वे कर्म क्षेत्र में कितनी भागीदारी है? इस तथ्य की तटस्थता से जाँच नहीं करते।"[109]

--: उपन्यास की समीक्षा :--

सन् १९३४ में हरि प्रसाद टम्टा 'समता' नामक दलित पत्र प्रकाशित किया। उसी वर्ष गांधीजी का 'हरिजन' आरंभ हुआ और डॉ. अम्बेडकर का ' जनता ' पत्र का प्रवेशांक २४ नवम्बर १९३० को प्रकाशित हुआ। इस पत्र के माध्यम से दलितों के तत्कालीन ज्वलंत सवाल उभर कर सामने आए। ऐसे समय में एक गैर-दलित हिंदू लेखक जैनेंद्र कुमार का 'सुनीता' नामक उपन्यास छपकर बाजार में आया। उसी उपन्यास का एक पात्र हरि प्रसन्न है। हरिप्रसाद घर-गृहस्थी से दूर होकर क्रांतिकारी बन गया है। लेकिन उसका विद्रोही बनने का मुख्य कारण है कि वह मन वांछित स्त्री को ना पा सका। हमारे यहाँ स्त्री से असंतुष्ट हुए तो सन्यासी बन गए और प्रेमिका का पूर्ण समर्पण नहीं मिला तो क्रांतिकारी बन गए।"[110]

"सन्यासी, १९४१ में आया जोशी का दूसरा उपन्यास है। इसका नायक नंदकिशोर आत्मघाती समाज दोषी अहंमन्य प्रवृत्ति का पात्र है। उसके अहं का शिकार बनती है नारी पात्र। असफलताओं, ईर्ष्याहीनता असंतोष और हाहाकार ने उसे शुष्क, निष्ठुर अहंवादी और शंकालु बना दिया है। उसके जीवन में आई 'शांति' और जयंती दोनों में से वह किसी को नहीं पा सका, जिस कारण उसने स्त्री जाति से ही विमुख हो सन्यास धारण कर लिया।"[111]

बुधुआ की बेटी' शीर्षक से १९२८ में छपे इस उपन्यास से १९२७ के प्रसंग है तो जाहिर है यह सब जल्दी-जल्दी में लिखा गया है। लेखक और लेखक के नायक पात्र जो दोनों ही ब्राह्मण है क्रिया कलापों से सिद्ध होता है कि भंगियों को आत्मसम्मान, स्वविवेक और अम्बेडकर के नेतृत्व में चल रहे उन्हें ब्राह्मणों पर निर्भर बनाया गया है। इसी कारण पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र ने इस उपन्यास

को १९५३ के संस्करण में बुधुआ (भंगी) की बेटी नाम हटाकर मनुष्यानंद यानि ब्राह्मण कृपाराम को नायक बना दिया है।

इन दो कथाओं में यानी 'एक सदी बांझ' और 'बुबुआ की बेटी' में दो दलित स्त्रियाँ सामने आई हैं। तीनों ही लगभग अपने - अपने रूप से आधुनिकता के प्रभाव के नाम से आ रही भूमंडलीकृत की ओर आकर्षित है। कथा के माध्यम से यह संदेश जाता है कि अंतरजातीय प्रेम और विवाह विश्वसनीय नहीं है। इसमें दलित तरबूज है सवर्ण छुरा। चाहे तरबूज छुरा पर गिरे या तरबूज पर छुरा, इसमें क्षति दलित की ही होती है। डॉ. मस्तराम कपूर की 'एक सदी बाँझ' में शुकुरू चमार की बेटी रूपा की संपूर्ण कथा ली है। संक्षेप में वह दत्तल गाँव के शुकुरू चमार की बेटी खेरा गाँव के नित्यानंद ब्राह्मण के बेटे दिवाकर से अंतर्जातीय प्रेम विवाह कर लेती है।

उसे बदलने में बहू(रूपा) द्वारा सास की सेवा की भूमिका मंद है। बीमार सास मौत के कगार पर आकर बदलती है। वह भूल जाती है कि वह एक चमार यानी अछूत की बेटी है। सास-बहू के रिश्ते यहां जाति भेद से ऊपर उठकर मानवीय स्तर पर जुड़े हैं। डॉ. धर्मवीर प्रश्न करते हैं क्या इस उपन्यास के द्वारा समाज में जाति-प्रथा तनिक भी टूट सकी है? इन अनुलोम विवाह में क्या हुआ है कि चमारों की सबसे सुंदर बेटी को ब्राह्मणों का सबसे निकम्मा लड़का ले गया है। चमारों को कुछ नहीं मिला है बल्कि उनकी सबसे सुंदर बेटी उनसे छीन ली गई है। यही होता है कि चमारों की सबसे अच्छी चीज को ब्राह्मणों का सबसे बेकार आदमी ले जाता है। किसी अनुलोम विवाह में यह नहीं हो सकता कि चमारों का कोई कुरूप बेटी ब्राह्मण के सुंदर बेटे को प्राप्त कर सकेगी। इस उपन्यास के बाहर प्रतिलोम विवाह में भी चमार ही घाटे में रहते हैं। तब चमारों के सबसे काबिल लड़के को ब्राह्मणों की सबसे निकाबिल लड़की हथिया लेती है।"[112]

प्रस्तुत पंक्ति में श्यौराज सिंह बेचैन यह दिखाना चाहते हैं कि किस तरीके से दलित समाज की होनहार बेटी को एक निकम्मा ब्राह्मण लड़का भागा ले गया जिस्सेदलित समाज को कोई लाभ नहीं होता है। ऐसी घटनाए समाज में घटित हो रही है। पाठकों को ऐसी घटनाओं से बचना चाहिए।

"एक कथित क्रांतिकारी के लिए यह पत्नी का योगदान भारतीय संस्कृति में अद्भुत है पर असंभव नहीं उच्च वर्णों में यह सब होता है।"[113]

काशी के पंडित उमादत्त जी के पुत्र 'लालमणि' और पुत्री 'भाग्यवती' है। पंडित जी पुत्र व पुत्री दोनों को शिक्षा देते हैं। दोनों को समान मानते हैं। अतः जब उनकी पत्नी उनसे दोनों के विवाह की बात करती है, तो वे कहते हैं कि पुत्र लालमणि का विवाह अठारह वर्ष में तथा पुत्री भाग्यवती का विवाह ग्यारहवें वर्ष में करेंगे।

प्रस्तुत उपन्यास में भाग्यवती कहती है यदि तुम चाहो तो मैं दस दिन में तुमको सारे व्यंजन बनाना सिखा सकती हूँ। अर्थात् शिक्षित स्त्री स्वयं को नहीं बल्कि समाज में भी शिक्षा फैलाने का कार्य करती है। यह सामान्य घरेलू शिक्षा है। इसका महत्व तभी तक है जब घर भरा हो। दलित घरों के लिए तो स्त्री को पुरुष के साथ उत्पादन क्षेत्र में भी हाथ बटाना होता है। उपन्यास में ही एक प्रसंग है। "पंडित जी ने मिश्र से पूछा बता रे! तूने यह ध्यान में काहे को रखा था। मनोहर, जा इस चमार के जने को थाने में ले जा और कह हमको विष खिलाया और ठगों से मिलके हमारा डेरा लुटवाया।

यह उपन्यास भाग्यवती का प्रसंग है जो सन १८८० में प्रकाशित हुआ था वैसा ही वातावरण आज भी समाज में सवर्ण लोगों का चरित्र एवं व्यवहार बिल्कुल वैसा ही है। भाग्यवती उपन्यास में युगीन समस्याओं का समाधान शिक्षा द्वारा ढूंढ़ने का प्रयास किया गया है। स्त्री शिक्षा से परिवार का ही नहीं बल्कि समाज व राष्ट्र का फायदा होगा। स्त्री अपनी बुद्धि से बड़ी से बड़ी विपत्ति को टाल सकती है।

प्रस्तुत उपन्यास में एक प्रसंग है जिसमें प्रमोद बुआ को मनाता है- मगर बुआ कहती है" मैं सामाजिक मर्यादा को तोड़ना नहीं चाहती। मैं तुम्हारी सहायता लेकर उच्च वर्ग में पुनः प्रतिष्ठित होना नहीं चाहती और वहां से चली गई। प्रमोद का रिश्ता वहां से खत्म हो गया।"[114]

मृणाल पात्र के माध्यम से स्त्री की संघर्ष की घटना को दिखाया गया है। उस समय देश अंग्रेजों का गुलाम था और ऐसी घटनाएं आज भी महिलाओं के साथ घटित हो रही है।

दैनिक हिंदुस्तान के अपने विमर्श स्तंभ में मृणाल पांडे ने लिखा है --" वह देश सचमुच के दलितों-महिलाओं की सत्ता का आधा हिस्सा खुशी से क्या देगा जहां अपने भाई को भी सुई की नोंक के बराबर जमीन के सवाल पर ही महाभारत मचता रहा है। सर्वदलीय सर्वानुमति यदि इधर किसी मुद्दे पर बनी है तो वह सिर्फ एक है: गरीबों की उपस्थिति को भूलाना।"[115]

हिंदुस्तान में पुरुषों के बराबर आने वाली महिलाओं की संख्या नगण्य रही है जो स्त्रियां आगे बढ़ी वह वर्ग दृष्टि से पूंजी-पतियों की स्त्रियाँ रही और वर्ण दृष्टि से ब्राह्मणों की स्त्रियां रही। दलित स्त्री की दशा तुलनात्मक दृष्टि से आज भी सर्वाधिक सोचनीय है। अंबेडकर ने स्त्री शक्ति की पहचान बहुत पहले कर ली थी जिसका प्रत्यक्ष साक्षात्कार उन्होंने महाड़ सत्याग्रह के दौरान किया। दलित महिलाओं के साथ अंबेडकर के आंदोलन में कुछ ब्राह्मण महिलाएं भी शामिल हुई थी। उनका उल्लेख व प्रशंसा डॉ. अम्बेडकर ने अपनी कलम से दर्ज की है। महाड़ में जब दलित स्त्रियों, बच्चों पर सनातनी हिंदुओं ने लाठी चार्ज किया। तब दुनियाभर में इस प्रकरण के बाबत सवर्ण असहिष्णुता की कटु आलोचना की गई।

बोरगांव (अलोडी) जिला वर्धा में 6 अप्रैल 1934 को हुई 'अछूत परिषद' में मुख्य जोर स्त्री शिक्षा और वैवाहिक जीवन में सुधार लाने पर दिया गया।"[116]

अम्बेडकर के आंदोलन में स्त्रियों की सहभागिता पर शोध पूर्ण कार्य केवल एक पुस्तक (आम्ही इतिहास घाड़वला) उर्मिला पवार और मीनाक्षी मून ने अम्बेडकर के आंदोलन में रही करीब ४० महिलाओं के साक्षात्कारों का संग्रह किया गया है।"[117]

अम्बेडकर के आंदोलनों सत्याग्रहों में स्त्रियों ने बराबर भाग लिया। सन् १९२७ का चोवदार तालाब सत्याग्रह के दौरान अम्बेडकर ने ऐतिहासिक भाषण दिये। जिन्हें उनके पत्र ब. भा. ने शब्दश: प्रकाशित किया। दलित महिलाओं से उन्होंने कहा आप सभी साफ - सुथरी रहें। सुशिक्षित उच्च-वर्गीय महिलाओं की भांति पर्याप्त परिधान धारण करें, पति या पुत्र में शराब पीने की लत है तो पीकर आने पर उन्हें घर के अन्दर प्रवेश न करने दे, बेटों और बेटियों दोनों को उचित शिक्षा दिलाये।"[118]

कौशल्या नंदेश्वर (बैसंत्री) अम्बेडकर के एक- एक शब्द संस्मरण में दोहराती हैं। सन् १९४२ में दलित महिला काफ्रेंस में व्यक्ति विचार अंबेडकर के विचार यद्यपि रिपोर्ट में भी दर्ज मिलते हैं किंतु बैसंत्री के प्रकाशित संस्करण कुछ और वृद्धि करते हैं उनके अनुसार "बाबा साहेब ने अपने भाषण में कहा था कि ब्राह्मण महिलाओं में जितना शील, पवित्रता और मनोबल है, वह आपमें भी है। धैर्यशील, पवित्रता में कोई कमी नहीं है। तब ब्राह्मण स्त्री के पेट से जन्मा बच्चा ऊंचा और तुम्हारे पेट से जन्मा नीचा क्यों? क्या आपने इस बारे में कभी सोचा है? यदि नहीं सोचा तो प्रतिज्ञा करो "कि इस कलंकित स्थिति में हम नहीं रहेंगी"..... अपने पत्नियों की मित्रवत सहयोगी बनो स्वयं अपने पैरों पर खड़ी होने पर ही बेटी-बेटियों की शादी करो, अधिक बच्चे पैदा मत करो।"[119]

संस्कृत ग्रंथों को समझने में अपनी मदद के लिए डॉ. अम्बेडकर ने सोहन लाल शास्त्री को अपने पास (25वर्ष) रखा था। शास्त्री जी ने अपने संस्मरणात्मक ग्रंथ में इस रोचक प्रसंग का उल्लेख किया है। (संयोग से शास्त्री जीवित है) उन्हीं के शब्दों में -- "मैं यमुना किनारे निगमबोध कुटिया में 'करपात्री' को मिलने गया। उनके साथ.... कुछ सेठ बातें कर रहे थे कि.... 'हिंदूकोड' पास हो गया तो हमारा सत्यानाश हो जाएगा। सारा कारोबार और संपत्ति में हमारी लड़कियों की भागीदारी से हमारे जमाता लड़कियों को उकसाकर संपत्ति का बंटवारा लेंगे। संपत्ति कारोबार में हिस्सा प्राप्त करेंगे। इस देश में मुसलमानों का राज रहा उन्होंने ऐसे कानून नहीं बनाये। जिसमें लड़कियां भाइयों से हिस्सा लें। अंग्रेजों ने दो सौ वर्ष राज्य किया। तब भी ऐसा कानून नहीं बनाया था। इस कानून के विरोध में प्रचार के लिए जितना धन चाहिए हम देंगे।"[120]

स्त्री के प्रति यह विरोध दूरगामी अन्याय था। ' हिंदूकोडबिल' के मुद्दे पर शिखर के नेताओं तक ने अम्बेडकर का साथ नहीं दिया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद खुलकर विरोध में थे। पंडित जवाहरलाल नेहरू काफी प्रगतिशील व्यक्ति थे, किन्तु प्रस्तुत विषय पर उनकी राय के बारे में वरिष्ठ चिंतक मधुलिमये लिखते हैं-- नेहरू की राय में सामाजिक अन्याय की समाप्ति आर्थिक परिवर्तन का परिणाम थी।"[121]

स्त्री संगठनों की ओर से उपेक्षा हिकारत का सिलसिला आज भी जारी है अम्बेडकर के स्त्री विषयक चिंतन को एकांगी और केवल दलित जातियों की स्त्रीयों तक सीमित किया जा रहा है। संपूर्णता में पूरा स्त्री समाज दलित है इसे नकारा नहीं जा सकता। लेकिन जिसे १९४२ में दलित स्त्रियों ने अपने वैयक्तिक साम्पत्तिक अधिकारों की आवाज उठाई वैसी आवाज अन्यत्र नहीं मिलती। अम्बेडकर ने कहा था--"स्त्रियों ने कितनी प्रगति की है। मैं इसी से समाज की प्रगति का मापन करता हूँ।"[122]

उदाहरण के लिए २१ फरवरी, १९२८ को मुंबई राज्य असेंबली में प्रसव कालीन अवकाश के संबंध में एक बिल पेश किया था। वसंतमून के अनुसार अम्बेडकर ने बिल पर बोलते हुए कहा "देश की इन माताओं को मातृत्व काल की निश्चित अवधि में विश्राम मिलना ही चाहिए। शासन अथवा मालिकों को इनका व्यय करना चाहिए।"[123]

अम्बेडकर का एक ही मंत्र था। वह है लड़कियों को शिक्षा देने से ही उनमें स्वाभिमान की ज्योति प्रज्वलित होती है। वह पुरुषों को समझाते हैं कि... अपनी उन्नति की गाड़ी का दूसरा पहिया (चाक) स्त्री समाज है उसको अपनी बराबरी की व्यवस्था में रखकर उसे भी शिक्षण का लाभ देना चाहिए - इस बेला (समय) में हमें खामोश नहीं बैठना चाहिए।... भावी पीढ़ी को शिक्षामृत पिलाकर उन्नति के शिखर पर पहुँचने का मार्ग सुलभ करें।"[124]

आज के समय में भी दलित आरक्षण को किस तरह हड़पा जा रहा है। उसका पहला उदाहरण भारती कॉलेज एवं अदिति कॉलेज में किस तरह उनके प्रतिनिधित्व को भी हड़पा जा रहा है। यह किसी से भी छिपा नहीं है ऐसे ही रेल विभाग, डाक विभाग, मेडिकल विभाग, शिक्षा विभाग आदि स्थानों पर एससी/एसटी/ ओबीसी के आरक्षण को खत्म किया जा रहा है।

मृणाल पाण्डे, मैत्रेयी पुष्पा जैसे गैर-दलित लेखिकाओं ने संघर्ष एवं आरक्षण को कभी केंद्र में नहीं रखा है। उसी का एक उदाहरण है जिसमें मैत्रेयी जी ने मीरा के विरोध की बात की है। छतरपुर की रानी को क्रांतिकारी बताया है। ताराबाई शिंदे और उपदेश की लेखिका का जिक्र भर किया है।

"एक अज्ञात हिंदू औरत 1 फरवरी, 1982 की प्रकाशित पुस्तक सीमंतनी उपदेश का संपादन 1988 में शेष साहित्य प्रकाशन से कराया था जिसमें डॉ

धर्मवीर भूमिका में लिखा है -- "यह एक हिंदू औरत थी। एक हिंदू के रूप में यह सारी हिंदू औरतों की बात कह गई है। इसमें एक बात सच होनी चाहिए कि लेखिका किसी धनी की बेटी रही है। यह बहुत पढ़ी-लिखी रही है।"[125]

हिंदू औरत का सच बोलना वैसे भी खतरे से खाली नहीं रहा, वह भी धार्मिक ग्रंथों, मान्यताओं और समाज में लागू व्यवस्था के चलते डॉ धर्मवीर ने लेखिका का सही कोट किया है "जो दौलतमंद विधवा होती है, बिरादरी के सब मिल के, भाई या देवर का या किसी रिश्तेदार का लड़का गोद में बिठा देते हैं उसके सब माल असबाब का मालिक बना देता है?"[126]

वह हिंदू औरतों की पोशाक के बारे में लिखती है -- "आज आधा हिंदुस्तान अंग्रेजी कोट, पतलून बूट पहनता है। तुमको भी चाहिए जो तुम्हारे फायदे की चीज हो, अंग्रेजी लेडियों से सीखो।" यह मूर्ख स्त्रियों को सुहाग के प्रतीकों में फंसी रखकर क्रुद्ध होती है जब कहती हैं-- "बेवकूफ औरतें यह नहीं समझती कि जब तक शादी नहीं होती है। तब तक लड़का किसके सगुन करने से जीता रहता है? जब औरत मर जाती है तो कौन इनके जीने का सगुन करता है? अगर इन्हीं में सुहाग है तो चाहिए औरत के साथ खाविंद भी मर जाए।"[127]

डॉ.भीमराव अंबेडकर से लेकर डॉ. धर्मवीर तक नारी के प्रश्न पर गैर-दलित नारी की विशेष चिंता करते आए हैं। इस पुस्तक की भूमिका में वे आगे लिखते हैं " जब कोई शूद्र शब्दों के उत्थान की अपने सच्चे दिल से बात करेगा तो उसे अनिवार्य रूप से नारियों के उत्थान की बात आगे रखनी पड़ेगी। यही कारण है कि डॉ. अम्बेडकर जितने शूद्रों के मुक्तिदाता है उतने ही बड़े वे औरतों के मसीहा बनकर उभरे हैं। उन्होंने भारतीय समाज के सामने हिंदू-कोड़बिल के रूप में नारियों की मुक्ति का टेस्टामेंट बना कर रखा था।"[128]

गगन गिल ने एक लंबा और सक्रिय पत्रकार जीवन व्यतीत किया है - 'संडे आब्जर्वर ' से लेकर 'टाइम्स ऑफ इंडिया' तक । इसलिए मुझे यह हजम नहीं हो रही थी कि अचानक कोई अपने आपको बाहरी दुनिया से पूरी तरह कैसे काट सकता है? गगन गिल के बारे में सुभाष चंद्र मौर्य यही बताते हैं "पत्रकारिता के फैलोशिप पर हावर्ड गई गगन गिल ने भारत आते ही सबसे पहले जो काम किया वह था पत्रकारिता छोड़ना।"

निष्कर्ष:– इस अध्याय में श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी पात्रों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बेचैन जी के साहित्य में नारी की एक अलग ही पहचान है जो कि हर स्तर पर शोधार्थी के मन को छूती हुई जाती है और साथ ही साथ अपने हर भावात्मक प्रतिरूपों को भी उसमें संजोए हुए रखती है। उसी के आधार पर वे अपनी समस्त रचनाओं में नारी को उसकी परिस्थिति के आधार पर उजागर करते हुए प्रतीत होते हैं। जैसा कि निम्न बिंदुओं में देखा जा सकता है: -

१:- यहां श्यौराज सिंह बेचैन ने स्त्री की आवाज को प्राथमिकता से रखा है।

२:- महाड़ सत्याग्रह में महिलाओं की आवाज से प्रेरित होकर डॉ. अंबेडकर ने संविधान में उनकी भागीदारी का वर्णन किया है।

३:- सवर्णवादी लेखक कभी भी दलित महिलाओ या लेखकों को नायक नहीं बनाते हैं।

४:- दलित की बात गैर दलित करते रहे हैं लेकिन उनकी मुक्ति का प्रयास कभी नहीं करते हैं।

५:- गैर दलित लेखिकाएं कभी भी दलित महिलाओं का वास्तविक पक्ष साहित्य के केन्द्र में नहीं रखती हैं।

६:- दलित साहित्यकार ही नारी की भागीदारी का सवाल साहित्य में रखते हैं। जिसका उदाहरण लेखक स्वयं है।

७:- दलित लेखक संविधान में मिले अधिकारों के तहत समाज में सद्भाव लाना चाहते हैं हैं। जिससे समाज में समरसता लाई जा सके।

-:संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21
2. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21
3. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21
4. वही।
5. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21
6. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21
7. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21
8. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21
9. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21
10. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21
11. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21
12. https://shwetashindi.blogspot.com/p/blog-page_21

13. 27/09/2020 /Ramesh kumar Chauhan/ www.surta.in

14. 27/09/2020 /Ramesh kumar Chauhan/ www.surta.in

15. 27/09/2020 /Ramesh kumar Chauhan/ www.surta.in

16. 27/09/2020 /Ramesh kumar Chauhan/ www.surta.in

17. 12/11/2017, www.rachanakar.org

18. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , क्रौंच हूं मैं, पृष्ठ संख्या४८-

19. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , क्रौंच हूं मैं,पृष्ठ संख्या३३-

20. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , क्रौंच हूं मैं, पृष्ठ संख्या४२-

21. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , क्रौंच हूं मैं, पृष्ठ संख्या३६-

22. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , क्रौंच हूं मैं,पृष्ठ संख्या३९-

23. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , नई फसल,पृष्ठ संख्या११८-

24. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , क्रौंच हूं मैं,पृष्ठ संख्या२४-

25. डॉ. श्यौराज सिंह 'बैचेन', नई फसल कुछ अन्य कविताएं (काव्य संग्रह), पृष्ट संख्या -११२

26. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , नई फसल कुछ अन्य कविताएं (काव्य संग्रह), पृष्ट संख्या -११२११३-

27. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , नई फसल कुछ अन्य कविताएं (काव्य संग्रह), पृष्ट संख्या ११३-

28. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , क्रौंच हूँ मैं (काव्य संग्रह), पृष्ट संख्या -४८
29. 03-december-2021/www.mpgkpdf.com
30. वही
31. वही
32. वही
33. वही
34. वही
35. वही
36. वही
37. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , कहानी- हाथ तो उग ही आते हैं, हंस (कथा मासिक पत्रिका), जनवरी 2014, पृष्ठ संख्या२५-
38. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , कहानी- हाथ तो उग ही आते हैं, हंस (कथा मासिक पत्रिका), जनवरी 2014, पृष्ठ संख्या२-५
39. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , कहानी- हाथ तो उग ही आते हैं, हंस (कथा मासिक पत्रिका), जनवरी 2014, पृष्ठ संख्या२७-
40. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , कहानी- 'अस्थियों के अक्षर', हंस (कथा मासिक पत्रिका), जनवरी 2014, पृष्ठ संख्या-३७
41. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , कहानी संग्रह - भरोसे की बहन, पृष्ठ संख्या८१-
42. श्यौराज सिंह -'बेचैन' , कहानी संग्रह भरोसे की बहन, पृष्ठ संख्या८८-८७-
43. श्यौराज सिंह बेचैन, कहानी संग्रह - भरोसे की बहन,

कहानी- सन्देश, पृष्ठ संख्या –14

44. श्यौराज सिंह बेचैन,श्यौराज सिंह बेचैन, कहानी-ओल्ड एज होम, पृष्ठ संख्या-24

45. श्यौराज सिंह बेचैन,भरोसे की बहन, कहानी -शीतल के सपने, पृष्ठ संख्या – 161

46. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरी प्रिय कहानियाँ, क्रीमी लेयर-कहानी, पृष्ठ संख्या-26

47. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरी प्रिय कहानियां, बस इत्ती सी बात, पृष्ठ संख्या –28

48. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरी प्रिय कहानियाँ, शिष्या बहू, पृष्ठ संख्या – 49

49. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरी प्रिय कहानियाँ, लवली,पृष्ठ संख्या-80

50. www.scotbuzz.org, by bandey-may29/2019

51. वही

52. वही

53. वही

54. वही

55. वही

56. वही

57. वही

58. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , मेरा बचपन मेरे कंधो पर, पृष्ठ संख्या -३४

59. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , मेरा बचपन मेरे कंधो पर, पृष्ठ्र संख्या -३६३७-

60. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , मेरा बचपन मेरे कंधो पर, पृष्ठ संख्या -५५५६-

61. श्यौराज सिंह 'बेचैन' , मेरा बचपन मेरे कंधो पर, पृष्ठ संख्या १०१-

62. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -43

63. श्यौराज सिंह बेचैन-, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या 49

64. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा-, पृष्ठ संख्या 61

65. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -62

66. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -65

67. श्यौराज सिंह बेचैन-, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या 66

68. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या --72

69. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -96

70. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -122

71. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -124

72. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -171

73. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -192

74. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -211

75. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -216

76. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -220

77. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -225

78. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -245

79. श्यौराज सिंह बेचैन-, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या 247

80. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -253

81. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या - 274

82. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -280

83. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -282

84. श्यौराज सिंह बेचैन-, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या 292

85. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -298

86. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -301

87. श्यौराज सिंह बेचैन-, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या 324

88. श्यौराज सिंह बेचैन-, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या 341

89. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -346

90. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -360

91. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -380

92. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -386

93. श्यौराज सिंह बेचैन, आत्मकथा, पृष्ठ संख्या -399

94. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 1

95. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 6

96. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 7

97. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 10

98. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 12

99. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 12

100. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 13

101. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 14

102. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 15

103. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 15

104. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 16

105. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 17

106. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 19

107. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 20

108. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 20

109. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 22

110. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 28

111. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 34

112. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 61

113. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 11

114. वही, पृष्ठ संख्या--11

115. वही, पृष्ठ संख्या -- 86

116. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 66

117. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 68

118. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 69

119. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 69

120. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 72

121. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 72

122. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 73

123. श्यौराज सिंह बेचैन, स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका, पृष्ठ संख्या- 73

124. वही, पृष्ठ संख्या -- 74 -75

125. वही, पृष्ठ संख्या –90

126. वही, पृष्ठ संख्या –91

127. वही, पृष्ठ संख्या – 92

128. वही, पृष्ठ संख्या --91

*****